वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन
2017–18

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

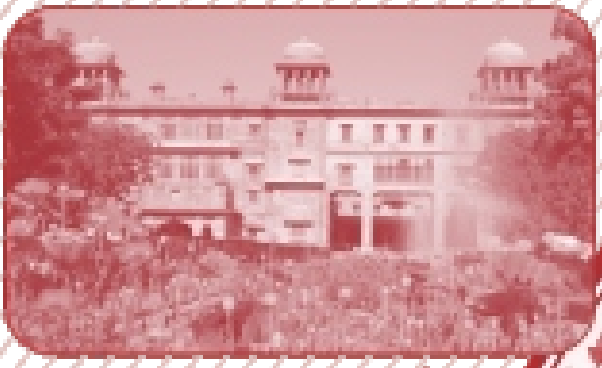

सी.वी.ए.एस., बीकानेर

सी.वी.ए.एस., नवानिया, उदयपुर

पी.ई.आई.वी.ई.आर., जयपुर

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बिजेय भवन पैलेस कॉम्पलेक्स, पंडित दीनदयाल सर्किल के पास

बीकानेर–334 001 (राज.)

website : www.rajuvas.org

वार्षिक प्रगति प्रतिवेदन
2017-18

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय
बिजेय भवन पैलेस कॉम्पलेक्स, पंडित दीनदयाल सर्किल के पास
बीकानेर-334 001 (राज.)
website : www.rajuvas.org

सम्पादक मण्डल

सलाहकार मंडल

प्रो. हेमन्त दाधीच
कुलसचिव

श्री अरविन्द बिश्नोई
वित्तनियंत्रक

प्रो. त्रिभुवन शर्मा
संकाय अध्यक्ष एवं अधिष्ठाता, सी.वी.ए.एस., बीकानेर

प्रो. विष्णु शर्मा
अधिष्ठाता, पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर

प्रो. चन्द्रशेखर वैष्णव
अधिष्ठाता, सी.वी.ए.एस., नवानियाँ, वल्लभनगर

प्रो. एस.के. कश्यप
अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर शिक्षा

प्रो. एस.सी. गोस्वामी
अधिष्ठाता, छात्र कल्याण

प्रो. आर. के. सिंह
निदेशक, अनुसंधान

प्रो. अवधेश प्रताप सिंह
निदेशक, प्रसार शिक्षा

प्रो. जे.एस. मेहता
निदेशक, क्लिनिक्स

प्रो. जी. सी. गहलोत
परीक्षा नियंत्रक

डॉ. अशोक डांगी
प्रभारी, आई.यू.एम.एस.

इंजि. एम.आर. चौधरी
निदेशक, कार्य

संरक्षक

प्रो. बी. आर. छीपा

कुलपति

मुख्य सम्पादक

प्रो. राकेश राव

निदेशक, पी.एम.ई.

प्रकाशक

प्राथमिकता, नियंत्रण एवं मूल्यांकन प्रकोष्ठ (पी.एम.ई. सेल)

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बीकानेर, राजस्थान–334 001

ईमेलः dpmerajuvas@gmail.com

प्रस्तावना

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर अपनी स्थापना के 7 वर्षों में देश व प्रदेश में तेजी से आगे बढ़ता हुआ विश्वविद्यालय बना है। राज्य सरकार द्वारा इस विश्वविद्यालय की स्थापना 13 मई, 2010 को की गई। राजस्थान सरकार द्वारा प्रदेश में राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की स्थापना का यह कदम इस बात का द्योतक है कि पशुपालन का राज्य की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था पशुपालन आधारित है जो कि 70 लाख परिवारों की सीधी आय से जुड़ा है।

विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के अल्पकाल में ही देश के विश्वविद्यालयों की सौ शीर्ष शैक्षणिक संस्थानों की सूची में अपना स्थान बनाने में कामयाबी हासिल की है एवं केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा देश के विश्वविद्यालयों/शैक्षणिक संस्थाओं की रैंकिंग में शीर्ष स्थान प्राप्त किया है। देश के पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में राजुवास नें तीसरा एवं राजस्थान के सभी विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में इस विश्वविद्यालय ने दूसरा स्थान प्राप्त कर उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। निजी बेवसाइट के ऑनलाइन सर्वे में देश के पशु चिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालयों एवं प्रदेश के निजी एवं सरकारी विश्वविद्यालयों की रेकिंग में राजुवास ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालकों हेतु 24X7 टोल फ्री हेल्पलाइन चलायी जा रही है जिसके द्वारा पशुपालक घर बैठे ही पशुपालन से जुड़ी समस्त नवीनतम जानकारियों हेतु विशेषज्ञों से बात कर सकते है। वर्तमान में विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालयों में स्नातक प्रवेश क्षमता 240 है। विश्वविद्यालय में उपलब्ध शिक्षकों की संख्या के आधार पर 44 स्नातकोत्तर एवं 36 पी. एच. डी. की सीटें हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय को पाँच वर्ष के लिये अधिस्वीकरण प्रदान किया गया है। अपनी स्थापना की अल्पावधि में ही विश्वविद्यालय ने शिक्षण और अनुसंधान के क्षेत्र में कई नए आयाम स्थापित करके वैज्ञानिक शिक्षण और प्रशिक्षण के साथ–साथ पशुपालकों को उन्नत तकनीक और ज्ञान प्रदान करने जैसे कार्यों को भी तेजी से अंजाम दिया है। आधुनिक पशुचिकित्सा, पशुपालकों के हित में नई तकनीकों का विकास, पशुपालन संसाधनों के सुदृढ़ीकरण और पशुपालकों के शिक्षण–प्रशिक्षण में एक अग्रणी संस्थान के रूप में इस विश्वविद्यालय को तैयार किया गया है। युवाओं को स्वरोजगार के अवसर उपलब्ध करवाने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर और नवानियां (उदयपुर), स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर, पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन (जैसलमेर), नोहर (हनुमानगढ़), बोजून्दा (चित्तौड़गढ़) और डग (झालावाड़) में दो वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। 10+2 के पश्चात द्विवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम में शिक्षा प्राप्त कर ग्रामीण युवा पशु स्वास्थ्य एवं प्रबंधन से संबंधित प्राथमिक एवं लघु पशुचिकित्सा सेवाएं देकर स्वरोजगार प्राप्त कर सकते हैं। अब इन संस्थानों की संख्या राज्य में 72 हो गई है। इससे राज्य में प्रतिवर्ष 3600 के लगभग युवाओं को स्वरोजगार के अवसर प्राप्त हो रहे हैं। विश्वविद्यालय के अनुसंधान निदेशालय के अन्तर्गत 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्र हैं, जिनमें पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर, बीछवाल (बीकानेर), कोडमदेसर (बीकानेर), चांदन (जैसलमेर), नोहर (हनुमानगढ़), नवानियां, वल्लभनगर (उदयपुर), बोजुंदा (चित्तौड़गढ) और डग (झालावाड़) प्रमुख हैं। धौलपुर में स्थित अंगई बकरी फार्म में सिरोही बकरियों पर अनुसंधान किया जा रहा है। प्रसार शिक्षा निदेशालय के तहत वर्तमान में जिला स्तर पर 13 वेटरनरी विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र नागौर, भरतपुर, श्रीगंगानगर, चित्तौड़गढ़, कोटा, चूरू, डूंगरपुर, अजमेर, टोंक, सिरोही, धौलपुर, जोधपुर एवं लूनकरणसर में कार्यशील हैं।

विश्वविद्यालय ने राज्य के विभिन्न स्थानों पर स्थित 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर राज्य की 6 देशी गौवंश नस्लों राठी, थारपारकर, गिर, साहीवाल, मालवी और कांकरेज के विकास और संवर्द्धन का कार्य शुरू किया है। यह गौवंश पोषणयुक्त ए–2 दूध, अधिक रोग प्रतिरोधक क्षमता और कम लागत होने के कारण हमारे लिए अधिक उपयोगी है। पशुधन अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से कृषकों, पशुपालकों और गौशालाओं में हैरिटेज जीन बैंक की अवधारणा को शुरू किया है। इसके तहत पशुपालकों व गौशालाओं को स्वदेशी गौवंश प्रजनन के लिए उन्नत किस्म के बछड़े और सांड उपलब्ध करवाये जा रहे हैं। राजुवास द्वारा 1000 से भी अधिक श्रेष्ठतम नस्ल के बछड़े व सांड उपलब्ध करवाए गए हैं। इससे गौशालाओं और पशुपालकों के यहां स्वदेशी गौवंश की संख्या में बढ़ोतरी के साथ हैरिटेज जीन बैंक की अवधारणा को मूर्त रूप मिल रहा है।

यह विश्वविद्यालय समाज, पशुपालकों और राज्य के हितों के लिए नवाचारों व योजनाओं के साथ लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए प्रयत्नशील है। हमारा प्रयास होगा कि यह विश्वविद्यालय देश और दुनिया के सिरमौर विश्वविद्यालयों में शामिल हो।

(बी. आर. छीपा)
कुलपति

अनुक्रमणिका

1.	**संक्षिप्त इतिहास**	**1**
2.	**संगठनात्मक ढांचा**	**3**
3.	**स्वीकृत–कार्यरत तथा रिक्त पदों का विवरण**	**4**
3.1	शैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति	4
3.2	अशैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति	5
3.3	निजी सचिव एवं मंत्रालयिक पदों की श्रेणीवार स्थिति	6
3.4	अन्य शिक्षक एवं तकनीकी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति	7
3.5	चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति	8
4.	**चालू वित्तीय वर्ष के बजट अनुमानों का उल्लेख**	**9**
5.	**विभागीय प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक प्रमुख कार्य के विरूद्ध आलौच्य वर्ष में प्रगति एवं उसकी विगत 3 वर्ष से तुलना**	**10**
5.1	अकादमिक कार्यक्रम	10
5.2	स्नातक पाठ्यक्रम (बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.)	11
5.3	स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एम.वी.एससी.)	12
5.4	विद्या–वाचस्पति / डाक्टरेट पाठ्यक्रम (पीएच.डी.)	14
5.5	पशुपालन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (ए.एच.डी.पी.)	15
5.6	स्वीकृत सीटों की संख्या का तुलनात्मक विवरण	18
5.7	स्वीकृत पदों की संख्या का तुलनात्मक विवरण	18
5.8	विश्वविद्यालय की विभिन्न बजट मदों का तुलनात्मक विवरण	18
6.	**राजुवास की गत तीन वर्ष की उपलब्धियां और कार्यों का विवरण**	**19**
6.1	राजुवास देश के विश्वविद्यालयों की शीर्ष रैंकिंग में हुआ शामिल	19
6.2	प्रशासन	20
6.3	शिक्षा	20
6.4	अनुसंधान	21
6.5	शिक्षा और अनुसंधान में सहभागिता के नये समझौते	24
6.6	प्रशिक्षण व प्रसार कार्य	24
6.7	उद्घाटन एवं लोकार्पण	25
7.	**सार संक्षेप**	**28**

संक्षिप्त इतिहास

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 की धारा 1 उपखण्ड (3) के अन्तर्गत नवस्थापित विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति स्वयं महामहिम राज्यपाल है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना दिनांक 13 मई, 2010 को की गई। इस नए विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही प्रो. ए.के. गहलोत को विश्वविद्यालय का प्रथम कुलपति नियुक्त किया गया। अपनी स्थापना की अल्पावधि में ही विश्वविद्यालय ने प्रबंधन मण्डल, अकादमिक परिषद्, अनुसंधान परिषद् और प्रसार परिषद् आदि संवैधानिक निकायों का गठन किया। इन निकायों के गठन के साथ ही कुलपति ने केन्द्रीय सलाहकार समिति, जनसम्पर्क प्रकोष्ठ और प्लेसमेंट प्रकोष्ठ का गठन किया। साथ ही कुलपति ने अधिष्ठाता स्नातकोत्तर शिक्षा, परीक्षा नियंत्रक, अधिष्ठाता छात्र कल्याण, निदेशक क्लिनिक, निदेशक प्रसार शिक्षा, निदेशक कार्य, निदेशक पी.एम.ई. आदि महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियां की और कुछ अन्य समितियां बनाई गई जिससे विश्वविद्यालय अधिनियम के अनुरूप समस्त कार्यों का क्रियान्वयन किया जा सके।

राजस्थान सरकार द्वारा राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की स्थापना का यह कदम इस बात का द्योतक है कि पशुपालन का राज्य की अर्थव्यवस्था में बहुत महत्वपूर्ण योगदान है। राज्य के सकल घरेलू उत्पाद में पशुपालन का योगदान समग्र कृषि में 50 प्रतिशत से अधिक है। पशुपालन की ताकत इस बात में है कि इस क्षेत्र की विकास दर (4–6 प्रतिशत) कृषि की तुलना में हमेशा उच्च रही है। इस क्षेत्र में 90 प्रतिशत श्रम महिलाओं द्वारा किया जाता है और राज्य के लगभग 70 प्रतिशत ग्रामीण परिवारों की आय का प्रमुख स्त्रोत पशुपालन है।

राज्य में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में प्रगति हेतु इस विश्वविद्यालय को स्थापित किया गया। विश्वविद्यालय और संबद्ध महाविद्यालयों में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान और संबंधित विषयों के बारे में उचित और व्यवस्थित निर्देशन, शिक्षण–प्रशिक्षण, अनुसंधान और प्रसार शिक्षण करवाया जाता है। पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान उद्योगों और व्यवसाय के साथ एकीकरण की देहलीज पर है, जो कि राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों को पोषित करके उत्पादन और बाजार श्रृंखला का मूल्य संवर्धन करती है। छात्रों में स्वावलंबन की शिक्षा जो उसके इच्छित पदस्थापन को सुरक्षित करे और शहरी एवं ग्रामीण समाज की आशाओं को भी शिक्षण, अनुसंधान, प्रसार के गठजोड़ से पूरा किया जा सकता है। राजस्थान सरकार अध्यापन, शिक्षण अनुसंधान और प्रसार के प्रयासों को सुगठित करने में विश्वविद्यालय की हमेशा सहायक रही है और विश्वविद्यालय को वृद्धि उन्मुख और प्रगतिशील बनाने में भी सहयोग करती है। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय का मुख्यालय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के परिसर में स्थित है। इस विश्वविद्यालय के पुर्ननिर्माण और प्रगति की प्रक्रिया सतत् रूप से जारी है तथा अपनी स्थापना के अल्पावधि में ही इस विश्वविद्यालय ने कुलपति के मार्गदर्शन, ऊर्जावान नेतृत्व, सकारात्मक दृष्टिकोण, नए विचार और कुशल प्रशासकीय क्षमता द्वारा उत्तरोत्तर प्रगति की है।

यह विश्वविद्यालय एक भव्य और विरासतकालीन भवन तत्कालीन पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर (सन् 1954 से) में स्थित है, जिसकी परिसीमा 200 एकड़ भूमि पर फैली हुई है। बिजेय भवन पैलेस एक शानदार लाल पत्थर का महल है जिसकी परिकल्पना प्रसिद्ध वास्तुकार सर स्विटंन जैकब ने की थी एवं महाराजा गंगा सिंह (सन् 1881–1942) ने अपने पुत्र कुँवर बिजेय सिंह के निवास के लिए इसे सन् 1927 में बनवाया था। दो दूसरे भवन, राज्य संग्रहालय जिसे सार्दुल सदन भी कहते है तथा राज्य पुस्तकालय का निर्माण भी मुख्य भवन के साथ–साथ करवाया गया था। ये भव्य भवन विशुद्ध राजपूत सामरिक वास्तुकला का उदाहरण है। इनमें कई बड़े कक्ष, प्रतीक्षालय, गुम्बज और मण्डप है। बाह्य भव्य भवनों में खंभें, नक्काशीदार मशालें, इतालवी स्तंभावली है। स्वतंत्रता के पश्चात राजस्थान सरकार ने राज्य में एक पशुचिकित्सा महाविद्यालय को आरंभ करने के लिए विचार किया तथा गंगा एवन्यू पर स्थित इन तीनों स्मारक भवनों को 200 एकड़ भूमि के साथ महाविद्यालय के लिए सौंप दिया।

विश्वविद्यालय अपने तीन प्रमुख अंग– शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के निष्पादन के लिए समस्त सुविधाओं से सुसज्जित है। वर्तमान में विश्वविद्यालय के तीन संघटक महाविद्यालय है, ये बीकानेर, उदयपुर (नवानियाँ) और जयपुर में स्थित है। राजस्थान देश का पहला राज्य है जहां पशुचिकित्सा शिक्षा के क्षेत्र में जन–निजी सहभागिता का मॉडल अपनाया गया। इसके अन्तर्गत राज्य में 3 निजी वेटरनरी महाविद्यालय इस विश्वविद्यालय में संबद्ध है। राजस्थान की ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ की हड्डी पशुपालन के लिए पशु स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए यह विश्वविद्यालय राजस्थान में लगभग 500 पशुचिकित्सक प्रतिवर्ष तैयार करने में सक्षम हैं ताकि पशुओं के स्वास्थ्य की उचित देखभाल हो सके।

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर की स्थापना सन् 1954 में विरासत कालीन भवन में हुई। यह भारतीय पशुचिकित्सा परिषद् के अनुरूप महाविद्यालय स्नातक डिग्री (बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.) प्रदान करता है। यह महाविद्यालय 18 विषयों में एम.वी.एस.सी., 1 विषय में एम.एस.सी. और 16 विषयों में पीएच.डी. की उपाधि प्रदान करवाता है। विश्वविद्यालय के अन्तर्गत 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्र है, जिनमें पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर, बीछवाल (बीकानेर), कोडमदेसर (बीकानेर), चांदन (जैसलमेर), नोहर (हनुमानगढ़), नवानियाँ, वल्लभनगर (उदयपुर), बोजुन्दा (चित्तौड़गढ) एवं डग (झालावाड़) प्रमुख है। विश्वविद्यालय से सम्बद्ध एवं संघटक 72 संस्थान 2 वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम करवा रहे है, जिससे प्रतिवर्ष लगभग 3600 पैरावेट प्रशिक्षण की क्षमता हो गयी है। ये संस्थान बीकानेर, अलवर, भरतपुर, चुरू, दौसा, डूँगरपुर, हनुमानगढ़, जयपुर, झुंझुनूं, जोधपुर, करौली, कोटा, बूंदी, श्रीगंगानगर, सीकर, टोंक, झालावाड़, जालौर, जैसलमेर, चितौड़गढ़, धौलपुर, बाड़मेर, बारां और उदयपुर आदि जिलों में स्थित है। पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के अलावा नए पशुपालन डिप्लोमा संस्थान स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान केन्द्र, जयपुर, पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन, पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ (उदयपुर) में स्थित है। हाल ही में बोजुन्दा, चितौड़गढ एवं डग, झालावाड जिलों में भी पशुधन अनसुंधान केन्द्रों की स्थापना विश्वविद्यालय द्वारा की गई है। जयपुर स्थित अनुसंधान केन्द्र को स्नातकोत्तर शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान में परिवर्तन कर आठ विषयों में स्नातकोत्तर शिक्षा प्रारंभ कर दी गई है।

विश्वविद्यालय संगठन
कुलाधिपति
कुलपति
विद्या परिषद्
अनुसंधान परिषद्
प्रसार शिक्षा परिषद्
प्रबंध मण्डल
कुलसचिव
वित्त नियंत्रक

3. स्वीकृत–कार्यरत तथा रिक्त पदों का विवरण

3.1 शैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति

पद का नाम	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
आचार्य	49	18	31
सह–आचार्य	100 (3 आई.सी.ए.आर.)	30	70
सहायक आचार्य	190 (1 आई.सी.ए.आर.)	108	82
योग	339	156	183

3.2 अशैक्षणिक पदों की श्रेणीवार स्थिति

	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
(i) अधिकारी			
कुलपति	**1**	**1**	...
अधिष्ठाता	**3**	**–**	**3**
अधिष्ठाता, स्नातकोत्तर शिक्षा	**1**	**–**	**1**
निदेशक	**2**	**–**	**2**
कुलसचिव	**1**	**1**	...
वित्तनियंत्रक	**1**	**1**	...
परीक्षा नियंत्रक	**1**	..	**1**
अतिरिक्त निदेशक	**3**	..	**3**
निदेशक कार्य	**1**	**1**	...
पुस्तकालयाध्यक्ष	**1**	....	**1**
योग	15	4	11
(ii) कनिष्ठ अधिकारी			
उपकुलसचिव	**1**	...	**1**
सहायक कुलसचिव	**6**	**3**	**3**
उप वित्तनियंत्रक	**1**	...	**1**
सहायक निदेशक	**2**	..	**2**
सहायक अभियंता	**5**	**1**	**4**
उप–पुस्तकालयाध्यक्ष	**1**	**1**	...
सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष	**2**	...	**2**
लेखाधिकारी	**2**	**1**	**1**
विधि अधिकारी	**1**	...	**1**
कार्यक्रम समन्वयक	**4 (1 के.वी.के.)**	...	**4**
विषय विशेषज्ञ	**6 (6 के.वी.के.)**	...	**6**
योग	31	4	27
(iii) मंत्रालयिक कर्मचारी **(विश्वविद्यालय की सभी इकाईयों)**	**156 (3 आई.सी.ए.आर) (4 के.वी.के.)**	**45**	**111**
(iv) अन्य शिक्षक एवं तकनीकी कर्मचारी **(विभाग, प्रयोगशाला, फार्म एवं विभिन्न अनुसंधान केन्द्र)**	**206 (6 आई.सी.ए.आर) (4 के.वी.के.)**	**54**	**152**
(v) चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी	**405 (76 जॉब बेसिस) (1 के.वी.के.)**	**203**	**202**
योग **(i)+(ii)+(iii)+(iv)+(v)**	813	312	501
महायोग (शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक)	**1152**	**468**	**684**

***आई.सी.ए.आर (13 पद) **के.वी.के. (16 पद) ***जॉब बेसिस (80 पद)**

3.3 निजी सचिव एवं मंत्रालयिक पदों की श्रेणीवार स्थिति

क्र.सं.	पद का नाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त
1	निजी सचिव	1	1	...
2	सीनियर निजी सहायक	5	2	3
3	निजी सहायक	6	1	5
4	शीघ्रलिपिक	6 (**1 के.वी.के.)	1	5
5	अनुभाग अधिकारी	6	2	4
6	सहायक लेखाधिकारी	3	3	....
7	लेखाकार	7	7	....
8.	सहायक लेखाकार	1	....	1
9.	सहायक अनुभाग अधिकारी	7 (**1 के.वी.के.)	6	1
10.	वरिष्ठ लिपिक	19	10	9
11.	कनिष्ठ लिपिक	84 (*3 आई.सी.ए.आर) (***4 जॉब बेसिस)	12	72
12.	स्टोर मुंशी	2	...	2
13.	कम्प्यूटर ऑपरेटर	3	1	2
14.	विधि सहायक	1	...	1
15.	प्रोग्रामर	4	...	4
16.	प्रोग्राम सहायक	**2 (के.वी.के.)	...	2
	योग	**157**	**46**	**111**

*आई.सी.ए.आर (3 पद) **के.वी.के. (4 पद) ***जॉब बेसिस (4 पद)

3.4 अन्य शिक्षक एवं तकनीकी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति

क्र.सं.	पद का नाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त
	अन्य शिक्षक			
1	वी.ए.एस.	7	...	7
2	पशु चिकित्सा अधिकारी	3 (*1 आई.सी.ए.आर)	...	3
3	अनुदेशक	13	...	13
	तकनीकी कर्मचारी			
4	तकनीकी सहायक	60 (*2 आई.सी.ए.आर) (**3 के.वी.के.)	22	38
5	फार्म मैनेजर	2	...	2
6	फार्म सहायक	2	...	2
7	प्रोफेशनल असिस्टैंट (लाईब्रेरियन)	1	1	...
8	सहायक कृषि अधिकारी	4	3	1
9	डेयरी प्लांट ऑपरेटर	1	...	1
10	सीनियर मैकेनिक	1	...	1
11	प्रयोगशाला सहायक	34	1	33
12	जे.टी.ए.	2	...	2
13	आर्टिस्ट	1	...	1
14	स्टॉकमैन/एल.एस.ए.	15 (*3 आई.सी.ए.आर)	...	15
15	राईडिंग इंस्ट्रैक्टर	1	1	...
16	कृषि पर्यवेक्षक	3	...	3
17	लाईब्रेरी सहायक	3	1	2
18	पोल्ट्री सहायक	1	...	1
19	डेयरी सहायक	5	...	5
20	जूनि. कम्पाउंडर	2	...	2
21	बॉयलर ऑपरेटर	1	...	1
22	मैट्रोन	1	1	...
23	ड्राईवर	32 (**1 के.वी.के.)	11	21
24	पम्प ऑपरेटर	4	3	1
25	मिस्त्री	4	2	2
26	कारपेन्टर	2	1	1
27	वायरमेन	1	1	...
28	पलम्बर	1	1	...
29	ब्लैक स्मिथ	1	...	1
30	जूनियर मैकेनिक/फार्म मैकेनिक	6	5	1
31	क्यूरेटर	1	...	1
	योग	**215**	**54**	**161**

***आई.सी.ए.आर (6पद) ** के.वी.के. (4 पद)**

3.5 चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी पदों की श्रेणीवार स्थिति

क्र.सं.	पद का नाम	स्वीकृत पद	कार्यरत	रिक्त
1	हैड माली	1	...	1
2	बुक लिफ्टर	3	...	3
3	प्रयोगशाला अटैंडेन्ट	59	20	39
4	फार्म वर्कर	49 (* 31 जॉब बेसिस)	12	37
5	हाली/प्लगमैन	3	3	...
6	बुलॉक अटैंडेंट	6	5	1
7	कैटल अटैंडेंट	85 (*33 जॉब बेसिस)	33	52
8	सहायक	28	9	19
9	लाईब्रेरी बॉय	4	3	1
10	तांगा ड्राईवर	1	1	...
11	गार्डनर	8	6	2
12	शीप अटैंडेंट	3	3	...
13	फराश	1	1	...
14	वॉचमैन	6	2	4
15	बस क्लीनर	4	3	1
16	स्वीपर	13	4	9
17	पोल्ट्री अटैंडेंट	9 (*2 जॉब बेसिस)	6	3
18	बुचर	1	1	...
19	मैड	1	1	...
20	हॉस्टल अटैंडेंट	3	2	1
21	शैफर्ड	2	1	1
22	चपरासी	95 (**1 के.वी.के.) (*1जॉब बेसिस)	72	23
23	बेलदार	5	5	...
24	साईकिल सवार	1	1	...
25	एनिमल अटैंडेंट	26 (*16 जॉब बेसिस)	9	17
26	पोस्ट मार्टम अटैंडेंट	*1(जॉब बेसिस)	...	1
	योग	**418**	**203**	**215**

*** जॉब बेसिस (57 पद) ** के.वी.के. (1 पद)**

4. चालू वित्तीय वर्ष के बजट अनुमानों का उल्लेख

विस्तृत जानकारी निम्नानुसार प्रस्तुत हैः–

(अ) राज्य योजना

क्र.सं.	ब्यौरा	बी.ई. 2017–18
1	सामान्य मद	3878.34
2	टी.एस.पी.	1435.15
3	एस.सी.एस.पी.	1917.21
4	पेंशन हेतु ऋण	0.01
	कुल योग	7230.71

(ब) राष्ट्रीय कृषि विकास योजना **1357.77

(स) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् **315.00

(**) आर.ई. सम्बन्धित एजेंसियों के द्वारा जारी करने के अधीन है।

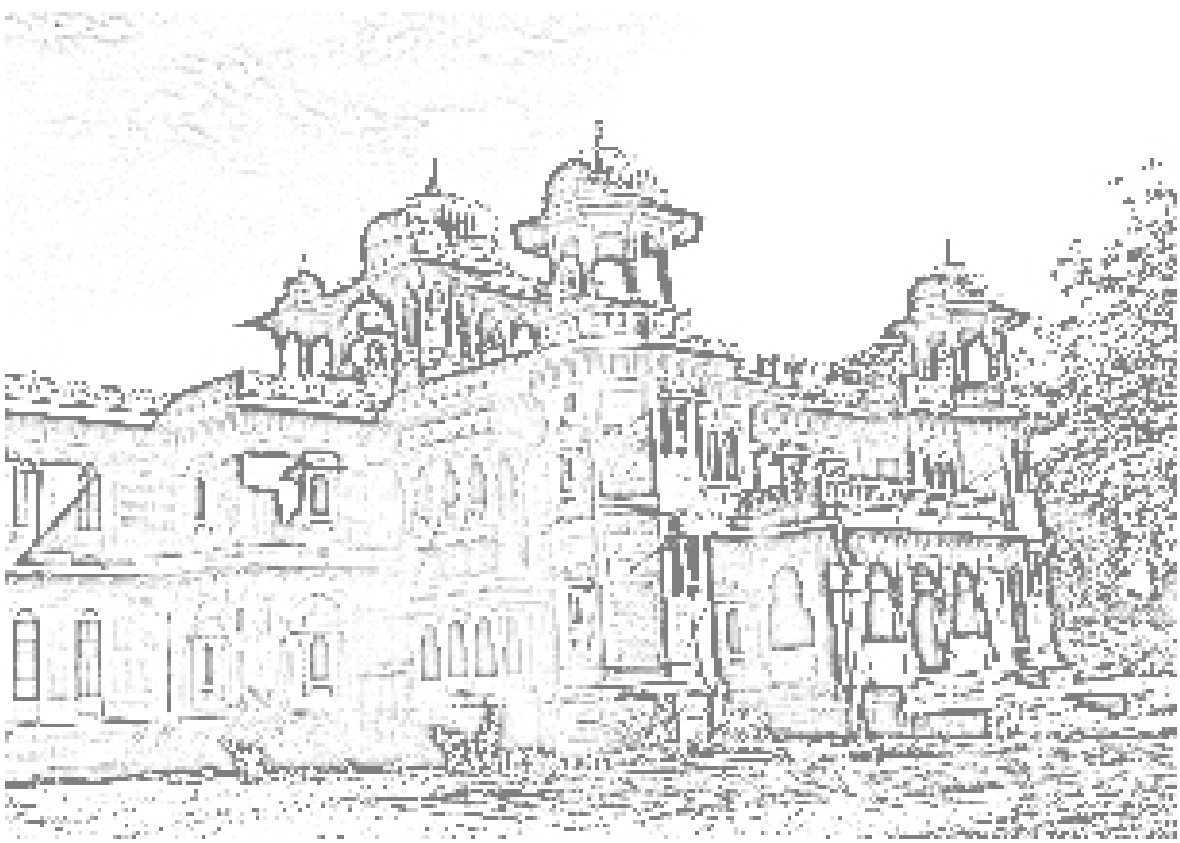

5. विभागीय प्रमुख कार्य तथा प्रत्येक प्रमुख कार्य के विरूद्ध आलौच्य वर्ष में प्रगति एवं उसकी विगत 3 वर्ष से तुलना

5.1 अकादमिक कार्यक्रम

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर की भूमिका और शासनादेश के अनुसार यह परिकल्पित किया गया है कि विश्वविद्यालय पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के क्षेत्र में शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार कार्यक्रमों को और आगे बढ़ाएगा। विश्वविद्यालय ने छात्रों को विभिन्न स्तरों पर जैसे डिप्लोमा, स्नातक, स्नातकोत्तर और पी.एच.डी पर प्रशिक्षण देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है। राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर विधार्थियों को अनेकों शैक्षणिक और प्रशिक्षण कार्यक्रमों द्वारा शिक्षित एवं प्रशिक्षित कर रहा है ताकि उनमें ज्ञान एवं नेतृत्व विकसित हो सके और वे कुशल पेशेवर पशुचिकित्सक बन सकें तथा विश्वव्यापी आर्थिक चुनौतियों का मुकाबला कर सकें। विश्वविद्यालय में शिक्षण का कार्य संकाय अध्यक्ष, पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान, अधिष्ठाता पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय तथा विभागाध्यक्षों के निर्देशन में करवाया जाता है। विश्वविद्यालय में शिक्षण कार्य मुख्यतः व्याख्यान एवं इलेक्ट्रानिक शिक्षण साधनों का उपयोग, प्रयोगशालाओं में प्रयोगात्मक अध्ययन, चिकित्सालयों और पशुधन फार्मो पर कराया जाता है। स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों का आंतरिक एवं बाह्य परिक्षाओं द्वारा मूल्यांकन किया जाता है।

विश्वविद्यालय के महाविद्यालयों द्वारा विभिन्न शैक्षणिक कार्यक्रमों के लिये स्नातक, स्नातकोत्तर तथा विद्या वाचस्पति स्तर पर विद्यार्थियों को अनुसंधान परियोजना निर्माण, विश्वविद्यालय व राष्ट्रीय स्तर पर सह पाठ्यक्रम कौशल प्रदान करने, शैक्षणिक भ्रमण और इंर्टनशिप प्रशिक्षण के लिये सुविधाऐं प्रदान की जाती हैं।

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय के अन्तर्गत संघटक महाविद्यालय व संस्थान निम्न प्रकार से हैं।

1. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर
2. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, उदयपुर
3. स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर
4. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, चांदन, जैसलमेर
5. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, नोहर, हनुमानगढ़
6. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, बोजुन्दा, चितौड़गढ़
7. पशुधन अनुसंधान केन्द्र, डग, झालावाड़

वर्तमान में राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान के संकाय में निम्नलिखित पाठ्यक्रम कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं।

उपाधि	पाठ्यक्रम	अवधि
स्नातक पूर्व	**पशुपालन में डिप्लोमा** (भारतीय पशुचिकित्सा परिषद अधिनियम, 1984 के अनुसार न्यूनतम पशुचिकित्सा सेवा प्रदाताओ के लिए बुनियादी योग्यता)	2 वर्ष
स्नातक	**बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.**	5 वर्ष 6 माह
स्नातकोत्तर	**एम.वी.एससी.** पशु शरीर रचना एवं औतिकी, पशु शरीर क्रिया विज्ञान, पशु जैव रसायन विज्ञान, पशु पोषण, पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी, पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन, पशु व्याधिकी, पशु सुक्ष्म जैविकी, पशु परजीवी विज्ञान, पशु जनस्वास्थ्य, पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र, पशु जानपदिक रोग विज्ञान एवं निवारक चिकित्सा, पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण, पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान, पशुचिकित्सा एवं पशुपालन प्रसार शिक्षा, पशु जैव प्रौद्योगिकी, पशुचिकित्सा भेषज एवं विष विज्ञान, पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी विज्ञान	2 वर्ष
	एम.एस.सी पशु जैव प्रौद्योगिकी	2 वर्ष
विद्या वाचस्पति	**पीएच.डी.** पशु शरीर रचना एवं औतिकी, पशु शरीर क्रिया विज्ञान, पशु पोषण, पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी, पशुधन उत्पादन एवं प्रबंधन, पशु व्याधिकी, पशु सुक्ष्म जैविकी, पशु परजीवी विज्ञान, पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र, पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण, पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान, पशु जैव प्रौद्योगिकी, पशुचिकित्सा एवं पशु पालन प्रसार शिक्षा, पशु जनस्वास्थय विज्ञान, पशुचिकित्सा भेषज एवं विष विज्ञान, पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी	3 वर्ष

5.2 स्नातक पाठ्यक्रम (बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.)

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में स्नातक (बी.वी.एस.सी एण्ड ए.एच.) पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय के सभी संघटक एवं सम्बद्ध निजी पशुचिकित्सा महाविद्यालयों में चलाये जा रहे हैं। भारतीय पशुचिकित्सा परिषद के मानदण्डो के अनुसार यह पाठ्यक्रम साढ़े पाँच वर्ष की अवधि (पांच वर्ष का पाठ्यक्रम और 6 माह का इंर्टनशिप प्रशिक्षण) का है। वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालय, बीकानेर, नवानियाँ (उदयपुर) एवं पी.जी.आई.वी.ई.आर. जयपुर में यू.जी. पाठ्यक्रम में राज्य सरकार की स्वीकृति के बाद 80–80 सीटें की गई है। विगत वर्षों तक स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश राज्य की 85 प्रतिशत सीटों के लिये राजस्थान प्री पशुचिकित्सा परीक्षा (आर.पी.वी.टी) के माध्यम से और 15 प्रतिशत सीटों के लिये भारतीय पशुचिकित्सा परिषद, नई दिल्ली द्वारा परीक्षा आयोजित की जाती थी जो कि नवीन आदेशों के तहत सत्र 2017–18 में कॉमन परीक्षा 'अखिल भारतीय प्री. वेटरनरी टेस्ट (ए.आई.पी.वी.टी.) के माध्यम से प्रवेश प्रक्रिया सम्पन्न करवाई गई।

बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच. पाठ्यक्रम में छात्र संख्या
सत्र 2017–18

क्र.सं.	*संघटक एवं संबद्ध पशुचिकित्सा महाविद्यालयों का नाम	बी.वी.एससी. एण्ड ए.एच.					कुल छात्र
		I	II	III	IV	V	
1.	*पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	93	71	91	78	55	388
2.	*पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियँ, वल्लभनगर, उदयपुर	98	63	85	88	41	375
3.	*पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	87	50	55	---	---	192
4.	अपोलो कॉलेज ऑफ वेटरनरी मेडिसिन, जयपुर	35	---	---	---	17	52
5.	महात्मा गांधी पशुचिकित्सा महाविद्यालय, भरतपुर	---	---	---	---	---	---
6.	एम.जे.एफ. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, चोंमू, जयपुर	23	---	---	37	08	68
7.	बी.एस. कॉलेज ऑफ वेटरनरी मेडिसिन एण्ड रिसर्च सेंटर, नवलगढ़, झुंझनु	---	---	---	---	---	---
8.	अरावली पशुचिकित्सा महाविद्यालय, सीकर	24	57	61	54	41	237
9.	श्रीगंगानगर पशुचिकित्सा महाविद्यालय, श्रीगंगानगर	---	---	---	---	---	---
10.	एम.बी. पशुचिकित्सा महाविद्यालय, डुंगरपुर	---	---	---	---	---	---
कुल छात्र		360	241	292	257	162	1312

5.3 स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एम.वी.एससी.)

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम (एम.वी.एससी.) विश्वविद्यालय के निम्नलिखित तीन संघटक महाविद्यालयों में चलाये जा रहे है।

1. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर
2. पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, उदयपुर
3. स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर

विश्वविद्यालय ने वर्तमान में उपलब्ध शिक्षकों की संख्या के आधार पर गत् सत्र में 44 पी.जी. की सीटें बढ़ाई है। स्टॉफ और सुविधाओं की उपलब्धता के आधार पर एम.वी.एससी. के लिए प्रत्येक विषय में कम से कम तीन और अधिकतम छः सीटें हैं। एम.वी.एससी. में प्रवेश प्री.पी.जी परीक्षा द्वारा राज्य की सीटों पर किया जाता है इसके अलावा प्रत्येक विषय में 1 सीट आईसीएआर द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्री.पी.जी. परीक्षा के माध्यम से किया जाता है। पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान में स्नात्तकोतर पाठ्यक्रम पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय नवानियाँ, उदयपुर तथा स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा व अनुसंधान संस्थान, जयपुर में निम्नलिखित विषयों में चलाये जा रहे हैं।

पशुचिकित्सा विज्ञान में स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रम के लिए सीटों की संख्या

क्र. सं.	विषय	पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर			पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ	पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर
		राज्य*	आई.सी.ए.आर**	संदाय ***	संदाय	संदाय
1.	पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी	3	1	1	2	2
2.	पशु पोषण	3	1	1	2	2
3.	पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन	3	1	1	2	2
4.	पशु शरीर रचना एवं औतिकी	1	1	1	2	–
5.	पशुचिकित्सा एवं पशु पालन प्रसार शिक्षा	2	–	–	1	2
6.	पशु जैव रसायन	2	1	1	–	–
7.	पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र	3	1	1	2	2
8.	पशु जानपदिक रोग विज्ञान एवं निवारक चिकित्सा	–	1	–	–	–
9.	पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान	3	1	1	2	–
10.	पशु सूक्ष्म–जैविकी	2	1	1	2	2
11.	पशु परजीवी विज्ञान	2	1	1	2	–
12.	पशु व्याधिकी	3	1	1	2	2
13.	पशु शरीर क्रिया विज्ञान	1	1	–	1	–
14.	पशुचिकित्सा जनस्वास्थ्य विज्ञान	–	1	–	2	–
15.	पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण	6	1	1	2	–
16.	पशु जैव प्रौद्योगिकी	–	–	2	–	–
17.	पशुचिकित्सा भेषज एवं विष विज्ञान	–	–	2	–	–
18.	पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी	–	–	2	2	2
	कुल	34	14	2+4+8 अधिकतम 14	26	16

* प्रत्येक विषय में एक सीट राज्य के पशुपालन विभाग में कार्यरत पशु चिकित्साधिकारी, वरिष्ठ पशु चिकित्साधिकारी या अन्य कोई पद के लिए आरक्षित है, जबकि उन्हें पशुपालन विभाग राजस्थान सरकार द्वारा इस पाठ्यक्रम के लिए अनुमति तथा अनापत्ति प्रमाण पत्र जारी किया गया हो। ऐसे उम्मीदवारों को प्री.पी.जी. परीक्षा से छूट दी गई है तथा इन सीटों के खाली रहने पर इन सीटों को राज्य सीटों में जोड़कर प्री.पी.जी. परीक्षा उत्तीर्ण उम्मीदवारों से भरा जायेगा।

** श्रेणी प्री.पी.जी. परीक्षा से छूट प्राप्त है और रिक्त सीटों को राज्य सीटों में जोड़ दिया जायेगा।

*** पशु जैव प्रौद्योगिकी विषय के लिए कुल दो सीट हैं और अन्य विषयों के लिए प्रत्येक विषय में एक सीट के साथ कुल अधिकतम 8 सीटें है।

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर में पशु जैव प्रौद्योगिकी विषय में एम.एस.सी. की कुल 2 सीटें है।

एम.वी.एससी. पाठ्यक्रम में छात्र संख्या
सत्र 2017–18

संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालयों का नाम	शैक्षणिक सत्र	एम.वी.एससी.		कुल छात्र
		I	II	
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	2017-18	65	56	121
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर	2017-18	26	25	51
पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	2017-18	16	13	29
कुल छात्र		**107**	**94**	**201**

5.4 विद्या–वाचस्पति / डाक्टरेट पाठ्यक्रम (पीएच.डी.)

डाक्टरेट पाठ्यक्रम में प्रवेश विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, विनियमन के अनुसार विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित प्री. पी.जी. परीक्षा के आधार पर निम्नलिखित विषयों में दिये जाते हैं। पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर एवं पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर (उदयपुर) में डाक्टरेट पाठ्यक्रम सत्र् 2015–16 से शुरू किया गया हैं। विश्वविद्यालय ने वर्तमान में उपलब्ध शिक्षकों की उपलब्धता के आधार पर चालू सत्र में 36 पीएच.डी. की सीटें बढ़ाई हैं।

क्र.सं.	विषय	पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर			पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ	पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर
		राज्य	आई.सी.ए.आर	संदाय	संदाय	संदाय
1.	पशु प्रजनन एवं आनुवांशिकी	3	1	–	–	1
2.	पशु पोषण	3	1	–	–	2
3.	पशुधन उत्पादन एवं प्रबन्धन	2	1	–	1	1
4.	पशु शरीर रचना एवं औतिकी	1	–	–	1	–
5.	पशुचिकित्सा एवं पशु पालन प्रसार शिक्षा	–	–	–	–	–
6.	पशु नैदानिक चिकित्सा, आचार एवं न्यायशास्त्र	2	1	–	–	–
7.	पशु प्रसूति एवं मादा रोग विज्ञान	–	–	–	–	–
8.	पशु सुक्ष्म–जैविकी	2	–	–	1	–
9.	पशु परजीवी विज्ञान	1	1	–	–	–
10.	पशु व्याधिकी	2	1	–	1	–
11.	पशु शरीर क्रिया विज्ञान	1	1	–	–	–
12.	पशुचिकित्सा जनस्वास्थ्य विज्ञान	1	–	–	1	–
13.	पशु शल्य चिकित्सा एवं विकिरण	2	–	–	1	–
14.	पशु जैव प्रौद्योगिकी	–	–	2	–	–
15.	पशुचिकित्सा भेषज एवं विष विज्ञान	–	–	–	–	–
16.	पशुधन उत्पाद प्रौद्योगिकी	–	–	2	–	1
	कुल	20	07	04	06	05

पीएच.डी. पाठ्यक्रम में छात्र संख्या

संघटक पशुचिकित्सा महाविद्यालय का नाम	शैक्षणिक सत्र	पीएच.डी.			कुल छात्र
		I	II	III	
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	2017-18	23	12	07	42
पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, वल्लभनगर, उदयपुर	2017-18	3	4	15	22
पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर	2017-18	3	1	4	8
कुल छात्र		**29**	**17**	**26**	**72**

5.5 पशुपालन में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (ए.एच.डी.पी.)

विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन में स्वरोजगारोन्मुख दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम शैक्षणिक सत्र 2007–08 से चलाया जा रहा है। विश्वविद्यालय इस कार्यक्रम के लिए बुनियादी सुविधाऐं हॉस्टल, नैदानिक सुविधाऐं, फार्म सहित मौजूदा सुविधाओं का उपयोग कर रहा है। वर्ष 2017–18 में दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम विश्वविद्यालय के 7 संघटक एवं 65 संबद्ध संस्थानों में चलाया जा रहा है।

विश्वविद्यालय के संघटक एवं संबद्ध पशुपालन डिप्लोमा संस्थानों में छात्र संख्या सत्र 2017–18

क्र.सं.	संघटक पशुपालन डिप्लोमा संस्थानों का नाम	दो वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम		कुल छात्र संख्या
		I	II	
1.	*पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर	41	36	77
2.	*पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान महाविद्यालय, नवानियाँ, उदयपुर	53	49	102
3.	*स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर	42	34	76
4.	*पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, चांदन, जैसलमेर	36	32	68
5.	*पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, नोहर, हनुमानगढ़	46	45	91
6.	*पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, चित्तौड़गढ़	45	47	92
7.	*पशुपालन डिप्लोमा संस्थान, पशुधन अनुसंधान केंद्र, डग, झालावाड़	36	49	85
8.	चौधरी चरण सिंह कॉलेज ऑफ एनिमल हसबेंडरी, अलवर	50	50	100
9.	दीन बंधु शिक्षण संस्थान, खेड़ली गंज, अलवर	50	46	96
10.	सती जावदे पशुधन सहायक प्रशिक्षण संस्थान, नीमराना, अलवर	50	49	99
11.	सर छोटू राम पशुधन सहायक प्रशिक्षण संस्थान, भरतपुर	50	50	100
12.	श्री संतराम पशुधन सहायक प्रशिक्षण संस्थान, डीग, भरतपुर	49	50	99
13.	श्री अभय पशुपालन महाविद्यालय, गांधी नगर, बीकानेर	50	51	101
14.	श्री कृष्ण पशुधन सहायक प्रशिक्षण महाविद्यालय, तिलक नगर, बीकानेर	50	49	99
15.	माँ करणी पशुधन सहायक प्रशिक्षण महाविद्यालय, नाल, बीकानेर	50	50	100
16.	चौधरी कॉलेज ऑफ एनिमल हसबेंडरी, सादुलपुर, चूरू	50	50	100

क्र.सं.	संघटक पशुपालन डिप्लोमा संस्थानों का नाम	दो वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम		कुल छात्र संख्या
		I	II	
17.	स्वामी ललतानंद पशुपालन विद्यालय, दौसा	50	50	100
18.	चमन कॉलेज ऑफ एनिमल हसबेंडरी, बांदीकुई, दौसा	50	50	100
19.	एम.बी. वांगड़ पशुधन सहायक प्रशिक्षण केन्द्र, डुंगरपुर	50	50	100
20.	स्वामी शिक्षा समिति पशुधन सहायक प्रशिक्षण कॉलेज, हनुमानगढ़	50	50	100
21.	सरदार वल्लभभाई पटेल एनिमल हसबेंडरी कॉलेज, नोहर, हनुमानगढ़	50	50	100
22.	बी.बी.एम.एस. पशुपालन महाविद्यालय, नई रामगढ़ रोड़, जयपुर	50	50	100
23.	लिबर्टी पशुधन सहायक प्रशिक्षण संस्थान, अजमेर रोड़, जयपुर	50	50	100
24.	राजीव गांधी मेमोरियल पशुपालन महाविद्यालय, न्यू सांगानेर रोड़, जयपुर	50	50	100
25.	शिवम कॉलेज ऑफ एनिमल हसबेंडरी, जोबनेर, जयपुर	50	50	100
26.	सुभाष पशुपालन महाविद्यालय, अजमेर रोड़, जयपुर	50	50	100
27.	राजकीय पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान, बस्सी चक, जयपुर	49	46	95
28.	एम.जे.एफ. इंस्टि्टयूट ऑफ वेटरनरी साइंस, चौंमू, जयपुर	50	50	100
29.	श्री विनायक रिसर्च एंड ट्रेनिंग इंस्टि्टयूट, कानोता, जयपुर	50	50	100
30.	चौधरी चरण सिंह एनिमल हसबेंडरी कॉलेज, शाहपुरा, जयपुर	50	50	100
31.	महात्मा ज्याति राव फुले शिक्षण संस्थान, सोढाला, जयपुर	50	50	100
32.	सुरेंद्र पशुपालन महाविद्यालय, न्यू सांगानेर रोड़, सोढ़ाला, जयपुर	50	49	99
33.	संकल्प पशुचिकित्सा एवं पशुपालन संस्थान, झालावाड़	50	50	100
34.	आर.इ.डी. पशुपालन महाविद्यालय, चिड़ावा, झुंझुनू	50	50	100
35.	आदर्श पिलानी पशुपालन महाविद्यालय, पिलानी, झुंझुनू	50	51	101
36.	राजकीय पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान, रतनाड़ा, जोधपुर	47	47	94
37.	पशुधन सहायक प्रशिक्षण कॉलेज, शांतिप्रिय नगर, जोधपुर	50	49	99
38.	मयूराक्षी शिक्षा और विकास संस्थान, चौपासनी रोड़, जोधपुर	50	50	100
39.	श्री एस.एल.जांगु पशुचिकित्सा विज्ञान संस्थान, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर	50	50	100
40.	श्री लाल बहादुर शास्त्री रिसर्च एंड ट्रेनिंग इंस्टि्टयूट, शक्ति नगर, जोधपुर	50	49	99
41.	वीणा मेमोरियल पशुधन सहायक प्रशिक्षण विद्यालय, पड़ेवा, करौली	50	50	100
42.	राजीव गांधी पशुपालन डिप्लोमा कॉलेज, हिण्डौनसिटी, करौली	50	50	100
43.	राजकीय पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान, मोखापुरा, कोटा	45	45	90
44.	एम.डी.एम. पशुपालन महाविद्यालय, केशवपुरा, कोटा	50	50	100
45.	पशुधन सहायक प्रशिक्षण संस्थान, बारां, राजस्थान	50	50	100
46.	सर्वोदय पशुधन सहायक प्रशिक्षण संस्थान, बूंदी	50	50	100

क्र.सं.	संघटक पशुपालन डिप्लोमा संस्थानों का नाम	दो वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम		कुल छात्र संख्या
		I	II	
47.	पशुपालन महाविद्यालय, मनोहर बाई मंदिर समिति, सेठिया कॉलोनी, श्रीगंगानगर	50	50	100
48.	एलायन्स शिक्षण एवं अनुसंधान संस्थान, पिपराली रोड़, सीकर	50	50	100
49.	राजस्थान कॉलेज ऑफ एनिमल हसबेंडरी, नवलगढ़ रोड़, सीकर	50	50	100
50.	देव पशुधन सहायक प्रशिक्षण महाविद्यालय, टोंक	50	50	100
51.	राजकीय पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर	45	46	91
52.	प्रकाश इंस्ट्टियूट ऑफ वेटरनरी सांइस एंड एनिमल हसबेंडरी, धौलपुर	50	50	100
53.	श्रीजी एनिमल हसबेंडरी ट्रेनिंग इंस्ट्टियूट, उदयपुर	50	50	100
54.	नागफनी पशुधन डिप्लोमा प्रशिक्षण केंद्र, खेरवाड़ा, उदयपुर	50	50	100
55.	आर.एन. पशुधन डिप्लोमा कॉलेज, जोधपुर	50	50	100
56.	कैमब्रिज नर्सिंग इंस्टिटयूट ऑफ वेटरनरी सांइस, बाड़मेर	50	50	100
57.	आदर्श पशुधन सहायक प्रशिक्षण संस्थान, नदबई, भरतपुर	50	50	100
58.	मारवाड़ इंस्ट्टियूट ऑफ वेटरनरी सांइस, चौपासनी रोड़, जोधपुर	50	50	100
59.	जवान सिंह मेमोरियल वेटरनरी एंड एनिमल हसबेंडरी कॉलेज, भीनमाल, जालौर	50	50	100
60.	महाराणा प्रताप पशुधन सहायक प्रशिक्षण केंद्र, बसेड़ी, धौलपुर	50	47	97
61.	कामधेनु पशुधन सहायक प्रशिक्षण संस्थान, सांचौर, जालौर	50	50	100
62.	युनिवेट पशुधन सहायक प्रशिक्षण संस्थान, नवलगढ़ रोड़, सीकर	50	50	100
63.	स्वामी सोमनाथ पशुधन सहायक कॉलेज, हनुमानगढ़	50	50	100
64.	जमादार एनिमल हसबेंडरी डिप्लोमा कॉलेज, महवा, दौसा	50	50	100
65.	डायमंड इंस्ट्टियूट ऑफ वेटरनरी सांइस, फलौदी, जोधपुर	50	50	100
66.	स्वामी विवेकानन्द वेटरनरी संस्थान, झुंझनु	50	50	100
67.	श्री गणपति आदर्श एल.एस.ए. प्रशिक्षण संस्थान, बूंदी	50	50	100
68.	पोदार एनीमल हसबेंडरी डिप्लोमा इंस्ट्टियूट,	50	50	100
69.	सूर्या सर्वोदय विकास संस्थान हिण्डौन रोड़, मलीपुरा शेरगढ़, बयाना, भरतपुर	50	.....	50
70.	के.एम.बी. आदर्श विद्या मन्दिर, मीना बास, भरतपुर	50	.....	50
71.	राजस्थान जनकल्याण समिति 01/101, शांति कुंज, अलवर	50	.....	50
72.	ग्रामीण विकास शिक्षा समिति, बमाड़ा कॉलोनी, बयाना, भरतपुर	50	.....	50
	कुल	**3534**	**3316**	**6850**

* संघटक संस्थान

5.6 स्वीकृत सीटों की संख्या का तुलनात्मक विवरण

पाठ्यक्रम	अवधि	स्वीकृत छात्र संख्या		
		2015-16	**2016-17**	**2017-18**
स्नातक	5 वर्ष 6 माह	260	260	240
स्नाकोत्तर	2 वर्ष	124	106	104
विद्या वाचस्पति	3 वर्ष	75	49	42
स्नातक पूर्व (डिप्लोमा)	2 वर्ष	**3350**	**3400**	**3600**

5.7 स्वीकृत पदों की संख्या का तुलनात्मक विवरण

पद का नाम	2015–16			2016–17			2017-18		
	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त	स्वीकृत	कार्यरत	रिक्त
आचार्य	47	16	31	47	18	29	49	18	31
सह–आचार्य	94	26	68	94	30	64	100	30	70
सहायक आचार्य	179	108	71	179	108	71	190	108	82
अधिकारी	15	10	5	15	4	11	15	4	11
कनिष्ठ अधिकारी	31	4	27	31	4	27	31	6	25
मंत्रालयिक कर्मचारी	156	46	110	156	45	111	156	45	111
तकनीकी कर्मचारी	206	54	152	206	54	152	206	54	152
चर्तुर्थ श्रेणी कर्मचारी / चपरासी	372	206	166	405	203	202	405	203	202
योग	**1100**	**470**	**630**	**1133**	**466**	**667**	**1152**	**468**	**484**

5.8 विश्वविद्यालय की विभिन्न बजट मदों का तुलनात्मक विवरण

क्र.सं.	ब्यौरा	बी.ई. 2015–16	बी.ई. 2016–17	बी.ई. 2017–18
1	सामान्य मद	3581.25	4054.70	3878.34
2	टी.एस.पी.	734.48	1425.65	1435.15
3	एस.सी.एस.पी.	1015.91	1215.64	1917.21
4	पेंशन हेतु ऋण	0.01	0.01	0.01
	कुल योग	**5331.65**	**6696.00**	**7230.71**
❖	राष्ट्रीय कृषि विकास योजना	3500.00	5730.00	1357.77
❖	भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्	360.00	800.00	315.00

6. राजुवास की गत तीन वर्ष की उपलब्धियां और कार्यों का विवरण

प्रदेश का एक मात्र राजस्थान पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर गत चार वर्षों में, टीम राजुवास के प्रयासों से एक तेजी से बढ़ता हुआ "विश्वविद्यालय" बना है। चार वर्ष की अवधि में वैज्ञानिक शिक्षण और प्रशिक्षण के साथ–साथ पशुपालकों को उन्नत तकनीक और ज्ञान प्रदान करने के लिए कई उपयोगी कार्यक्रम और योजनाओं का क्रियान्वयन किया गया।

6.1राजुवास देश के विश्वविद्यालयों की शीर्ष रैंकिंग में हुआ शामिल

❖ **मानव संसाधन विकास मंत्रालय के सर्वे में राजुवास को राज्य में मिली दूसरी रैंकिंग**

वेटरनरी विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना के अल्पकाल में ही देश के विश्वविद्यालयों की सौ शीर्ष शैक्षणिक संस्थानों की सूची में अपना स्थान बनाने में कामयाबी हासिल की है। भारत सरकार के केन्द्रीय मानव संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा देश के विश्वविद्यालयों/शैक्षणिक संस्थानों की रैंकिंग में वेटरनरी विश्वविद्यालय को शीर्ष स्थान प्राप्त हुआ है।

- राजस्थान के सभी 26 विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में वेटरनरी विश्वविद्यालय को दूसरा स्थान।
- देश के पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालयों की रैंकिंग में राजुवास को तीसरा स्थान।
- रैंकिंग पैरामीटर में टीचिंग, लर्निंग और रिर्सोसेज केटेगरी में वेटरनरी विश्वविद्यालय ने पूरे देश में छठा स्थान प्राप्त किया।
- राजुवास 97 वें स्थान पर रहा जो 100 शीर्ष संस्थानों में सबसे युवा विश्वविद्यालय है।

❖ **निजी वेबसाइट कम्पनी के ऑनलाइन सर्वे में भी राजुवास को मिली शीर्षस्थ रैंकिंग**

- देश के पशुचिकित्सा विश्वविद्यालयों में राजुवास ने प्रथम रैंक अर्जित की है।
- राज्य के निजी एवं सरकारी विश्वविद्यालयों में राजुवास ने प्रथम रैंक अर्जित की है।
- देश में कृषि एवं पशुचिकित्सा विश्वविद्यालयों में राजुवास ने द्वितीय रैंक हासिल की है।
- राज्य के निजी व सरकारी विश्वविद्यालयों में राजुवास को पांचवी रैंक प्रदान की गई है जिनमें केवल बिट्स, पिलानी, आई.आई.टी., जोधपुर, नेशनल लॉ युनिवर्सिटी, जोधपुर एवं एम.एन.आई.टी., जयपुर जैसे शीर्ष संस्थान ही राजुवास से आगे है।
- देश के पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालयों में बीकानेर के वेटरनरी कॉलेज को दूसरी रैंक तथा वेटरनरी कॉलेज, नवानियां को तीसरा स्थान।

❖ **राजुवास प्रदर्शनियों को उत्कृष्टता पुरस्कार**

- नई दिल्ली में 10–12 मार्च, 2015 को आयोजित पूसा कृषि विज्ञान मेले में प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार
- केन्द्रीय अर्द्ध शुष्क क्षेत्रीय अनुसंधान संस्थान, जोधपुर द्वारा 24 सितम्बर, 2015 को प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार
- केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर द्वारा 28 मार्च, 2016 को आयोजित राष्ट्रीय मेले में राजुवास प्रदर्शनी स्टॉल को उत्कृष्टता का पुरस्कार
- केन्द्रीय अर्द्ध शुष्क अनुसंधान संस्थान जोधपुर में 21 सितम्बर, 2016 को राजुवास प्रदर्शनी को प्रथम पुरस्कार मिला
- **बेस्ट कुलपति अवार्ड 2016 की घोषणाः** मदुराई (तमिलनाडू) के "पर्ल–ए फाउन्डेशन फॉर एज्यूकेशन एक्सीलैन्स" द्वारा वर्ष 2016 का "बेस्ट कुलपति अवार्ड" वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. ए.के. गहलोत को देने की घोषणा की गई है।
- **पर्ल फाउन्डेशन' ने इस वर्ष में उत्कृष्ट कार्यों ओर परिणामों के मद्देनजर वेटरनरी विश्वविद्यालय को तीन संस्थागत पुरस्कार भी दिए जाने की घोषणाः**

❖ आईसीटी टीचिंग–डिजीटल तकनीक के उपयोग का संस्थागत अवार्ड–2016

❖ जल संरक्षण–प्रबंधन प्रेक्टिसेज अवार्ड–2016

❖ उत्कृष्ट कृषि संस्थागत अवार्ड–2016

- **सेना घुड़सवारी प्रतियोगिता में 10 मेडलः** सेना घुड़सवारी प्रतियोगिता सितम्बर 2016 को जयपुर में आयोजित की गई जिसमें विश्वविद्यालय की एन.सी.सी. इकाई के कैडेट्स ने 10 मेडल जीते

6.2 प्रशासन

- राज्य सरकार द्वारा रिक्त पदों को भरने की स्वीकृति प्रदान की गयी जिनमें से 109 शिक्षकों/वैज्ञानिकों को नियुक्ति दी गयी। शेष 165 पदों पर भी नियुक्ति प्रक्रियाधीन है।
- विश्वविद्यालय में ई–शासन के तहत एकीकृत विश्वविद्यालय प्रबंधन केन्द्र की स्थापना की गयी है।
- विश्वविद्यालय की सभी इकाईयों में बायोमेट्रिक प्रणाली से उपस्थिति प्रारंभ कर दी गयी है।

6.3 शिक्षा

वेटरनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर परिसर में छात्राओं के छात्रावास की नई विंग का शिलान्यास 15 सितम्बर, 2015 को किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा अर्जित वित्तीय संसाधनों की 86 लाख रूपये राशि से इसका निर्माण किया गया है।

- **नया स्नातक पाठ्यक्रम चालूः** माननीय मुख्यमंत्री महोदया की बजट घोषणा 2015–16 में विश्वविद्यालय के पी. जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर कैम्पस, जो अब तक स्नातकोत्तर शिक्षण एवं अनुसंधान का कार्य करता था, वहां पर स्नातक स्तर की शिक्षा प्रारंभ करने का प्रावधान किया था। विश्वविद्यालय ने अथक प्रयत्न कर सत्र 2015–16 में ही वी.सी.आई. से अनुमति लेकर साठ स्नातक सीटों पर प्रवेश देकर स्नातक पाठ्यक्रम शुरू कर दिया। अब विश्वविद्यालय के तीनों परिसरों में स्नातक स्तर की शिक्षा दी जा रही है जिससे राजुवास के संघटक कॉलेजों में स्नातक प्रवेश क्षमता बढ़कर 260 हो गई है।
- **सीटें बढाईः** विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालयों में माननीय कृषि मंत्री महोदय ने पिछली विधानसभा सत्र में स्नातक स्तर पर प्रवेश क्षमता 100–100 सीटें प्रति महाविद्यालय करने की घोषणा की थी जिसे अकादमिक सत्र 2014–15 से ही लागू कर दिया गया है। अब इसे वी.सी.आई. ने भी स्वीकृति प्रदान कर दी है। बीकानेर और नवानियां (उदयपुर) महाविद्यालयों में स्नातक सीटें सत्र 2015–16 से बढ़ाकर सौ–सौ की गयी है। वी.सी.आई के नए निर्देशानुसार सत्र 17–18 में स्नातकता पर पर विश्वविद्यालय के तीनों संघटक महाविद्यालय में प्रवेश सीटे 80–80 कर दी गई है।
- **पशुपालन डिप्लोमा के दो नए संस्थान प्रारम्भः** डग (झालावाड़) व चितौड़गढ में दो वर्षीय पशुपालन डिप्लोमा के दो नए संस्थान खुलने से 100 शिक्षित युवाओं (10+2) को लघु पशुचिकित्सा सेवाओं के क्षेत्र में स्वरोजगार के अवसर मिले। माननीय मुख्यमंत्री महोदया ने अपने बजट भाषण में डग (झालावाड़) में पशुधन अनुसंधान केन्द्र पर द्विवर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू करने की घोषणा की गई है। इस केन्द्र हेतु राज्य सरकार द्वारा लगभग 268 बीघा जमीन विश्वविद्यालय को उपलब्ध करवाई गई है। लगभग 150 लाख रुपये व्यय कर आधारभूत संरचना को उपयोग योग्य बनाया गया है। डग (झालावाड़) में द्विवर्षीय पशुपालन डिप्लोमा पाठ्यक्रम 17 नवम्बर 2015 से प्रारंभ किया गया है।
- वेटरनरी विश्वविद्यालय के बीकानेर एवं वल्लभनगर परिसरों में छात्र–छात्राओं के नये छात्रावासों का निर्माण करवाया जा रहा है। जयपुर परिसर में भी निर्माण शीघ्र प्रारंभ किया जायेगा।
- सत्र 2016–17 से विद्यार्थियों को पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान स्नातक में प्रवेश के लिए वी.सी.आई. द्वारा आयोजित अखिल भारतीय प्री–वेटरनरी टेस्ट की मेरिट से ही प्रदेश के महाविद्यालयों में प्रवेश की सरकार द्वारा अनुमति दी गयी। सत्र 2017–18 में वी.सी.आई. के निर्देशानुसार स्नातक प्रथम वर्ष में राजस्थान प्री वेटरनरी के द्वारा प्रवेश दिये गए।
- **उच्च अध्ययन की सुविधा का विस्तारः** राज्य सरकार की मंशा है कि राजस्थान वेटरनरी फील्ड में सर्वाधिक पी.जी. एवं पी.एच.डी. योग्यताधारी मानव संसाधन को तैयार करने वाला राज्य बने ताकि माननीय मुख्यमंत्री महोदया के सपने के अनुकूल राज्य में पशुपालन को और समृद्ध बनाने के लिए आवश्यक मानव संसाधन उपलब्ध हो सके। विश्वविद्यालय ने वर्तमान में उपलब्ध शिक्षकों की संख्या के आधार पर चालू सत्र में 44 पीजी एवं 36 पीएच.डी. की सीटें बढ़ाई हैं (कुल 80 सीटें)। अब राजस्थान के युवा वेटरनरी विषय के सभी 15 विषयों में तथा

ऐनिमल बॉयोटेक्नॉलोजी विषय में भी पी.जी. एवं पी.एच.डी. करने में सक्षम हो गये हैं। पी.जी. एवं पीएच.डी. शिक्षण की व्यवस्था विश्वविद्यालय के बीकानेर, जयपुर एवं वल्लभनगर (उदयपुर) तीनों ही परिसरों में कर दी गई है।

- **उच्च शिक्षा की छात्रवृत्ति में बढ़ोतरीः** माननीय मुख्यमंत्री महोदया ने पशुचिकित्सा शिक्षा के महत्त्व के मद्देनजर वर्ष 2016–17 के बजट में वर्तमान में स्नातकोत्तर और वाचस्पति में अध्ययनरत विद्यार्थियों को दी जाने वाली 5 हजार रुपये प्रतिमाह की छात्रवृत्ति को बढ़ाकर 10 हजार रुपये प्रतिमाह कर दी है।
- **आई.सी.ए.आर. द्वारा विश्वविद्यालय का अधिस्वीकरणः** भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय को 5 वर्ष के लिए अधिस्वीकरण प्रदान किया गया।
- **लैंग्वेज लैब की स्थापनाः** छात्रों के लिए लैंग्वेज लैब की विश्वविद्यालय में स्थापना
- **प्रथम दीक्षांत समारोह का आयोजन :–** माननीय राज्यपाल और कुलाधिपति राजुवास ने 16 सितम्बर, 2015 को विश्वविद्यालय के प्रथम दीक्षांत समारोह में पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान की 1127 उपाधियां प्रदान कर 57 छात्र–छात्राओं को स्वर्ण पदकों से नवाजा। इस प्रथम दीक्षांत समारोह में 917 स्नातक, 199 स्नातकोत्तर और 11 विद्यार्थियों का विद्या–वाचस्पति की उपाधियां प्रदान की गई।
- **द्वितीय दीक्षांत समारोह का आयोजन :–** 20 जून 2017 को विश्वविद्यालय का द्वितीय दीक्षांत समारोह आयोजित किया गया। इस दीक्षांत समारोह में 327 स्नातक उपाधियां, 82 स्नातकोतर और 7 विद्या–वाचस्पति उपाधियां प्रदान कर 30 को स्वर्ण पदकों से नवाजा गया।
- **सतत् शिक्षा के विश्व पोर्टल से जुड़ा–** पोर्टल के माध्यम से विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों और छात्र/छात्राओं की पहली ऑनलाइन सेमीनार का आयोजन किया गया। इस प्रक्रिया से छात्रों और वैज्ञानिकों को नवीनतम अनुसंधान और शिक्षा के क्षेत्र में हो रही प्रगति की ताजा जानकारी मिल सकेगी।
- **डाइयां में सूचना केन्द्र की स्थापनाः** गोद लिए गांव डाइयां (बीकानेर) में विश्वविद्यालय द्वारा सूचना केन्द्र की स्थापना एवं पुस्तकालय सेवा शुरू की गई। विश्वविद्यालय द्वारा गांव के राजकीय उ.प्रा. विद्यालय में 250 वॉट क्षमता के चार सोलर ऊर्जा पैनल लगाए गए हैं जिनसे प्रति घंटे 1800 वॉट की सौर ऊर्जा मिलने से पंखे, बिजली, पेयजल आपूर्ति की मोटर और कम्प्यूटर उपकरणों का संचालन शुरू हो गया।

6.4 अनुसंधान

- **दो नये पशुधन अनुसंधान केन्द्र शुरू :** वेटरनरी विश्वविद्यालय ने पशुधन अनुसंधान को बढ़ावा देने हेतु पशुधन अनुसंधान केन्द्रों की स्थापना विभिन्न स्थानों पर की है। इस कड़ी में वर्ष 2015 में सातवां पशुधन अनुसंधान केन्द्र चितौड़गढ़ जिले के बोजून्दा में तथा आठवां पशुधन अनुसंधान केन्द्र माननीय मुख्यमंत्री की बजट घोषणा के अनुरूप डग (झालावाड़) में भी प्रारंभ हो गया है। बोजून्दा केन्द्र पर "नेशनल मिशन ऑन प्रोटीन सप्लीमेन्ट" कार्यक्रम के अंतर्गत 230 लाख रूपये की राशि से बकरी परियोजना को भी शुरू किया गया। पशुधन अनुसंधान केन्द्र चितौड़गढ़ में राजस्थान कृषि प्रतिस्पर्धात्मकता परियोजना (RACP), जो कि विश्व बैंक से वित्त पोषित है, कृषि में प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के उद्धेश्य से लागू की जा रही है तथा यहां सिरोही बकरियों का एक फार्म स्थापित कर दिया गया है। माननीय मुख्यमंत्री घोषणा के अनुरूप डग (झालावाड़) में मालवी नस्ल, जो कि दक्षिण पूर्वी राजस्थान की महत्वपूर्ण ड्यूअल परपज नस्ल है, का ब्रीडिंग सेन्टर भी स्थापित किया गया है।
  नस्ल सुधार में गति लाने के उद्धेश्य से विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय डेयरी विकास बोर्ड के सहयोग से भ्रूण प्रत्यारोपण कार्य शुरू कर थारपारकर नस्ल की गाय में पहला भ्रूण प्रत्यारोपण मई, 2017 में सफलता पूर्वक किया है। विश्वविद्यालय अब इनविट्रो फर्टिलाइजेशन तकनीक भी अपनाने की ओर अग्रसर है।

❖ **गौ–अनुसंधान**

- स्वदेशी गौवंश संवर्द्धन हेतु राज्य की छः चुनिंदा गौवंश राठी, थारपारकर, कांकरेज, गिर, साहीवाल एवं मालवी नस्लों के संवर्द्धन और संरक्षण पर कार्य के साथ ''हैरिटेज जीन बैंक'' संकल्पना के तहत राज्य की विख्यात गौवंश नस्लों के सात सौ पचास से अधिक नंदी/सांड दो सौ से अधिक गौशालाओं को उपलब्ध कराए।

- उच्च कोटि के स्वदेशी गौवंश सांडों के वीर्य को कृत्रिम गर्भाधान हेतु हिमीकृत करने का कार्य प्रारंभ कर दिया गया है।
- स्वदेशी गौवंश की दुग्ध उत्पादन क्षमता छब्बीस लीटर प्रति दिन तक, प्रथम ब्यांत आयु 2–3 वर्ष तथा दो ब्यांत में अंतर 13–14 महीने हुआ।
- डग (झालावाड़) में मालवी गौ नस्ल प्रजनन केन्द्र की स्थापना की गयी है। माननीय मुख्यमंत्री महोदया ने अपने बजट भाषण में डग (झालावाड़) में पशुधन अनुसंधान केन्द्र शुरू करने की घोषणा की है, जो राज्य में इस प्रकार का आठवां केंद्र होगा। इस केन्द्र हेतु राज्य सरकार द्वारा लगभग 268 बीघा जमीन विश्वविद्यालय को उपलब्ध करवाई गई है। दक्षिण–पूर्वी राजस्थान की महत्वपूर्ण ड्यूअल परपज मालवी नस्ल का ब्रीडिंग सेन्टर भी यहां स्थापित किया जा रहा है। केन्द्र पर 42 मालवी गौवंश की खरीद कर ली गई है।

❖ **पंचगव्य**

- राज्य के आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर और वेटरनरी विश्वविद्यालय में पंचगव्य एवं ऊँटनी के दूध पर अनुसंधान करने हेतु एम.ओ.यू. किया गया है।
- पारंपरिक पशुचिकित्सा एवं वैकल्पिक पशुचिकित्सा केन्द्र की स्थापना की गयी है ताकि पशुपालकों को सस्ती दवाएं उपलब्ध हो सके।

❖ **उच्च स्तरीय दुग्ध जाँच प्रयोगशाला**

मानसरोवर जयपुर परिसर में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत 150 लाख रूपये की राशि से उन्नत दुग्ध जांच प्रयोगशाला स्थापित की गई है। इस प्रयोगशाला का उद्देश्य नवीन सिन्थेटिक अवयवों, अत्यंत रोगकारी कीटाणुओं की उपस्थिति, औषधि व कीटनाशक अवशेषों व प्रदूषकों की खोज हेतु जयपुर में उच्च स्तरीय दुग्ध गुणवत्ता जांच अनुसंधान प्रयोगशाला स्थापित कर क्षमता संवर्द्धन करना है। वर्तमान में इस प्रयोगशाला में निम्न जांचों का मानकीकरण किया जा चुका है :

- दुग्ध में हुई मिलावट (यूरिया, सोडा, नमक, स्टार्च, डिटर्जेन्ट इत्यादि) की जांच एवं मिलावटी तत्वों का पता लगाना।
- दुग्ध के पोषक तत्वों (वसा, एस.एन.एफ., प्रोटीन, लेक्टोज इत्यादि) की उपस्थिति का पता लगाना।
- दुग्ध में पशु की कायिक कोशिकाओं की मात्रा का पता लगाना।
- थनैला रोग से ग्रसित दूध का पता लगाना।
- दूध में कीटनाशक अवशेषों की उपस्थिति का पता लगाना।
- दुग्ध में पाये जाने वाले अत्यंत रोगकारी कीटाणुओं की उपस्थिति का पता लगाना।
- हानिकारक कीटाणुओं की एन्टीबायोटिक्स के प्रति संवेदनशीलता का पता लगाना एवं हानिकारक बैक्टीरिया के एन्टीबायोटिक जीन का पता लगाना।
- हानिकारक बैक्टीरिया की डी.एन.ए. स्तर पर पुष्टि एवं हानिकारक बैक्टीरिया में रोगजनक जीन की उपस्थिति का पता लगाना।

  अभी तक राज्य के 28 जिलों से प्राप्त 4797 नमूनों की जांच की जा चुकी है। जांच परिणामों का परीक्षण जारी है जिसमें प्रमुखतया मिलावट, कीटनाशकों की उपस्थिति तथा रोगकारक बैक्टीरिया की उपस्थिति के क्षेत्रों का पता लग सकेगा।

❖ **पशु आहार, चारा एवं चारागाह**

- बीकानेर में पशु आहार की जांच के लिए राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में 150 लाख रूपये की राशि व्यय करके अत्याधुनिक राज्य स्तरीय पशु आहार जांच प्रयोगशाला स्थापित की गयी है।
- देश में प्रथम बार हाइड्रोपोनिक्स विधि से सेवण घास उगाने की तकनीक विकसित की गई तथा इसका जमीन में सफलतापूर्वक रोपण भी किया गया है।
- रिलायन्स इण्डस्ट्रीज लिमिटेड के साथ हरे चारे को लम्बे समय तक साइलेज बैग में संरक्षित किए जाने की तकनीक को पशुपालकों के लिए प्रदर्शित किया जा रहा है।

❖ **पशु रोग**

- बीकानेर में पशु रोगों पर नियंत्रण हेतु विश्वविद्यालय द्वारा 36.50 लाख राशि से वैक्सिनोलॉजी एवं बायोलॉजिकल प्रोडक्ट्स रिसर्च केन्द्र शुरू किया गया।
- वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर में ढाई करोड़ रूपये की लागत से पशु रोगों के निदान के लिए देश में पहली बार राजस्थान में पशु सीटी स्केन मशीन स्थापित की जा रही है। इस मशीन की स्थापना से पशु रोगों का मनुष्यों की तरह सटीक निदान हो सकेगा।
- बीकानेर में पशुओं के लिए ब्लड बैंक की सुविधा प्रारंभ की।
- पशुओं में होने वाले संभावित पशु रोगों का पूर्वानुमान भी विश्वविद्यालय द्वारा प्रत्येक माह जारी किया जा रहा है।
- जामडोली जयपुर में आयोजना मद से 630 लाख रूपये राशि से वेटरनरी क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स का निर्माण शुरू किया गया है।

❖ **ऊंट**

- ऊँटों के रोगों पर राज्य के शुष्क एवं अर्द्ध–शुष्क क्षेत्रों में उपयोग के अध्ययन हेतु रू. 250.00 लाख की एक परियोजना राष्ट्रीय कृषि विकास योजनान्तर्गत विश्वविद्यालय को स्वीकृत की गई है जिसके परिणाम ऊँटों के रोगों के निदान एवं उपचार में सहायक सिद्ध हो रहे हैं।
- वेटरनरी विश्वविद्यालय का राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर के साथ अंतर संस्थागत सहयोग भी स्थापित किया गया।
- ऊँटनी के दूध के चिकित्सकीय उपयोग पर अनुसंधान हेतु वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर एवं आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर के मध्य अनुसंधान की कार्य योजना प्रक्रियाधीन है।
- माननीय मुख्यमंत्री महोदया की वर्ष 2015–16 की बजट घोषणा सं. 92 की अनुपालना में राष्ट्रीय पशु जैव प्रौद्योगिकी संस्थान, हैदराबाद के सहयोग से ऊँटों की आनुवांशिकी, रोग प्रतिरोधक क्षमता एवं दुग्ध पर अनुसंधान हेतु परियोजना प्रस्ताव तैयार कर लिया गया है जो राज्य सरकार के विचाराधीन है।
- विश्वविद्यालय के वैज्ञानिकों द्वारा एक जर्नल "जर्नल ऑफ केमल प्रेक्टिस एंड रिसर्च" भी पिछले 22 वर्षों से प्रकाशित किया जा रहा है जिसमें भारत सहित विश्व के अनेक देशों के शोध पत्र प्रकाशित किये जाते हैं।
- ऊँटों के उपचार हेतु अत्याधुनिक चिकित्सा सुविधा– ट्रेविस व डाउनर बे का निर्माण।
- अल्जीरिया के शोधार्थी द्वारा ऊँटों के दूध पर शोध कार्य राजुवास में शुरू

❖ **बकरी विकास**

- धौलपुर में बकरी विकास केन्द्र की स्थापना की जा रही है।

❖ **अश्व**

- मारवाड़ी नस्ल के घोड़ों हेतु कृत्रिम गर्भाधान सुविधा प्रदान की जा रही है।

❖ **मुर्गी विकास**

- राजुवास वैज्ञानिकों द्वारा स्वदेशी कड़कनाथ के साथ विदेशी नस्ल के संकरण से "राजुवास ब्रॉयलर" तैयार किया गया। जिससे 200 से अधिक अण्डे प्रतिवर्ष तथा 10 सप्ताह में वजन 1.75 किग्रा प्राप्त किया गया है।

❖ **जल स्वावलंबन**

- वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर परिसर में 50 लाख रूपये राशि से वर्षा जल संग्रहण तंत्र का निर्माण किया गया है जिसमें साढे ग्यारह लाख लीटर वर्षा जल के संग्रहण और रीचार्ज की व्यवस्था है।

❖ **अन्य अनुसंधान परियोजनाएं**

- राष्ट्रीय कृषि विकास योजना में 95 करोड़ रूपये राशि की चार नई परियोजनाओं को स्वीकृति
- भारत सरकार की महिला वैज्ञानिक योजना में शोध परियोजना को मंजूरी

❖ **राज्य सरकार द्वारा भूमि आंवटन**

विश्वविद्यालय की गतिविधियों को पूरे राज्य में फैलाने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने विश्वविद्यालय के जयपुर कॉलेज, जिलों में स्थित पशुधन अनुसंधान केन्द्रों और पशुचिकित्सा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों हेतु भूमि उपलब्ध करवाई गई है।

- आंगई बकरी फार्म (धौलपुर) में 25 बीघा भूमि आंवटित की गई है।
- पशुचिकित्सा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र लूणकरणसर (बीकानेर) में 5776 वर्ग मीटर
- पशुधन अनुसंधान केन्द्र बोजून्दा चितौड़गढ़ 108.67 हेक्टेयर
- पशुचिकित्सा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र सिरियाकला (झुंझुनू) में 1 हेक्टेयर
- पशुधन अनुसंधान केन्द्र ताल ओडेला (धौलपुर) 3 बीघा 19 बिस्वा
- पशुधन अनुसंधान केन्द्र डग (झालावाड) 268.41 बीघा
- पशुचिकित्सा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र डूंगरपुर 12 बीघा
- राज्य सरकार द्वारा पशु चिकित्सा प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र जोधपुर हेतु 5.00 बीघा भूमि का आवंटन किया गया।

6.5 शिक्षा और अनुसंधान में सहभागिता के नये समझौते

- पंचगव्य तकनीक की आयुर्वेद चिकित्सा में उपयोगिता और पशुपालकों के लाभ के लिए डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन राजस्थान आयुर्वेद विश्वविद्यालय से अनुसंधान शुरू
- रिलायन्स इण्डस्ट्रीज लिमिटेड के साथ हरे चारे को लम्बे समय तक साइलेज बैग में संरक्षित किए जाने की तकनीक
- केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर के साथ मिलकर भेडों के स्वास्थ्य और उत्पादन के अनुसंधान
- राष्ट्रीय अश्व अनुसंधान केन्द्र हिसार के साथ अश्व नस्लों के अनुसंधान और शिक्षण कार्य
- सहज (सहज इनक्लूसिव ऑपरच्यूनिटीज इंडिया प्रा. लि. जयपुर) के साथ पशुपालन की नवीन तकनीक, दुग्ध उत्पादन व विपणन कार्यों को पशुपालकों तक पहुंचाना
- शरह नत्थानिया गोचर भूमि संरक्षण एवं विकास समिति, बीकानेर के साथ मिलकर गोचर विकास, देशी गौवंश व पर्यावरण के संरक्षण एवं संवर्द्धन के कार्य
- बेंगलूरू के प्राक्रुटिक ट्रस्ट और माइक्रोग्राम फाउन्डेशन के साथ पशुपालन के क्षेत्र में आधुनिक तकनीक और अनुसंधान को पशुपालकों तक पहुंचाना
- उरमूल ट्रस्ट के साथ प्रशिक्षण, अनुसंधान, प्रसार एवं विकास के लिए संस्थागत सहभागिता
- हिमाचल प्रदेश की महावतार बाबाजी कामधेनू गोशाला समिति, थपला (उना) के साथ हिमाचल प्रदेश में गौ संरक्षण, संवर्द्धन, पर्यावरण, अनुसंधान प्रशिक्षण एवं प्रसार का कार्य
- राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र के साथ करार हुआ

6.6 प्रशिक्षण व प्रसार कार्य

❖ **वेटरनरी युनिवर्सिटी प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों की स्थापनाः** सरकार की नीति है कि प्रत्येक जिले में विश्वविद्यालय का एक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र खोला जाये जहाँ पर वर्तमान में विश्वविद्यालय का कोई केन्द्र नहीं है। इसी नीति के तहत अब तक सूरतगढ, लाडनूं, चूरू, कुम्हेर, कोटा, अजमेर, सिरोही, डूंगरपुर, टौंक, चितौडगढ़, लूणकरणसर, धौलपुर तथा जोधपुर में तेरह वेटरनरी यूनिवर्सिटी प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केंद्रों की स्थापना की गयी है। इन प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों के माध्यम से पशुपालकों को नवीनतम तकनीकें तीव्र गति से प्रसारित की जा सकेंगी, साथ ही स्थानीय समस्याओं पर अनुसंधान एवं उनका समाधान भी जिले में ही संभव हो पायेगा। इस हेतु इन केन्द्रों पर दो प्रयोगशालाएं भी स्थापित होंगी, जिनमें रोग निदान तथा चारे–दाने की जांच भी हो सकेगी।

- ❖ **टोल फ्री हैल्पलाइन का शुभांरभ** :– माननीय राज्यपाल श्रीकल्याण सिंह ने 16 नवम्बर 2016 को वेटरनरी विश्वविद्यालय की महत्वाकांक्षी टोल–फ्री हैल्पलाईन सेवा का शुभारम्भ किया। चौबीस घण्टे इस टोल–फ्री नम्बर पर कृषक, पशुपालक और विद्यार्थी किसी भी समय पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के विशेषज्ञों, शिक्षकों अथवा अधिकारियों से बातचीत कर अपनी जिज्ञासा तथा शंकाओं का समाधान प्राप्त कर सकेंगे।
- ❖ **प्रशिक्षण एवं पशुचिकित्सा शिविरः** वेटरनरी विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों और संस्थानों द्वारा गत तीन वर्षों में 583 प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन कर 18663 कृषक और पशुपालकों को प्रशिक्षित किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा 29 पशुचिकित्सा शिविरों का आयोजन करके 689 पशुओं को लाभ पहुँचाया गया। 67 विचार–गोष्ठी और वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रमों का आयोजन करके 2501 कृषक–पशुपालक लाभान्वित किये गए।
- ❖ **पशुपालन व कृषि मेलों में प्रदर्शनियों का आयोजनः** वेटरनरी विश्वविद्यालय ने राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली, बेंगलुरू, नागपुर और मुक्तसर (पंजाब) में आयोजित पशुपालन व कृषि मेलों में 6 प्रदर्शनियों का आयोजन किया। राज्य स्तर पर जयपुर, बीकानेर, जोधपुर, हनुमानगढ़, पाली, सूरतगढ़ और अविकानगर में भी 7 प्रदर्शनियों का आयोजन किया गया। इन सभी प्रदर्शनियों में विश्वविद्यालय की हाईड्रोपोनिक्स तकनीक से हरा चारा व सेवण घास उगाने एवं पशुचिकित्सा व पशुपालन की अत्याधुनिक तकनीकों का प्रदर्शन किया गया जो राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर सराही गई।
- ❖ **राजुवास तकनीकी म्यूजियम की स्थापनाः** विश्वविद्यालय में तकनीकी म्यूजियम की स्थापना की गई है।
- ❖ **पशुपालकों के हित में रेडियो कार्यक्रमः** माननीय प्रधानमंत्री महोदय द्वारा रेडियो पर "मन की बात" कार्यक्रम के जरिये देश के दूर–दराज के क्षेत्रों में रेडियो की उपयोगिता की अवधारणा को पुर्नजीवित किया है। राजुवास ने एक रेडियो कार्यक्रम **"धीणें री बात्यां"** प्रारंभ किया है। राजस्थान के सभी 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रत्येक गुरूवार को शाम 5.30 से 6.00 बजे तक राजस्थान के सभी आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारित किया जा रहा है। पिछले तीन वर्ष में इस कार्यक्रम की 200 कड़ियों का प्रसारण किया गया है। इस कार्यक्रम के श्रोताओं की संख्या में बहुत अधिक वृद्धि हुई है।
- ❖ **पशुपालकों के हित में प्रकाशन कार्यक्रमः** पशुपालकों तक अपनी पहुंच के उद्देश्यों तथा समय–समय पर जानकारी देने हेतु राजुवास द्वारा "पशुपालन–नये आयाम" मासिक समाचार पत्र प्रारंभ किया गया है, जिसके अब पोस्टल रजिस्ट्रेशन नंबर भी प्राप्त हो गये हैं। अब तक "पशुपालन–नये आयाम" के 25 अंक प्रकाशित किये जा चुके हैं। प्रसार शिक्षा कार्यक्रम के तहत पशुपालकों और कृषकों के हित में त्रैमासिक पत्रिका "पशु आहार एवं चारा बुलेटिन" का प्रकाशन शुरू किया गया है तथा पिछले दो वर्षों में कुल 8 अंक प्रकशित किये जा चुके हैं। इन प्रकाशनों के साथ ही किसानों एवं पशुपालकों के लिए अन्य प्रचार सामग्री का प्रकाशन भी किया जा रहा है।
- ❖ **पशुपालकों के लिए उपयोगी प्रकाशन वेबसाइट पर उपलब्ध** : माननीय मुख्यमंत्री महोदया ने बीकानेर प्रवास के दौरान विश्वविद्यालय के कोडमदेसर अनुसंधान केन्द्र के भ्रमण के दौरान यह सलाह दी थी कि विश्वविद्यालय अपने सभी प्रकाशनों को, जो कि किसानों के उपयोग के हैं, विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर उपलब्ध करवाये। माननीय मुख्यमंत्री महोदया की सलाह के अनुरूप पिछले अंकों सहित किसानोपयोगी सभी प्रकाशन विश्वविद्यालय की वेबसाईट पर उपलब्ध करवा दिये गये हैं।

6.7 उद्घाटन एवं लोकार्पण

- माननीय राज्यपाल द्वारा विश्वविद्यालय में ई–शासन के तहत एकीकृत विश्वविद्यालय प्रबंधन केन्द्र का उद्घाटन बीकानेर में 15 सितम्बर, 2015 को किया गया।
- राजस्थान खादी एवं ग्रामोद्योग के अध्यक्ष श्री शंभूदयाल बड़गुजर द्वारा 30 मई, 2016 को राजुवास में पशुओं की नेत्र शल्य चिकित्सा ऑपरेशन थिएटर का उद्घाटन।
- माननीय राज्यपाल श्री कल्याण सिंह ने 15 सितम्बर, 2015 को राजुवास तकनीकी म्यूजियम का लोकार्पण किया
- माननीय राज्यपाल श्री कल्याण सिंह ने 11 दिसम्बर, 2015 को राजुवास परिसर, बीकानेर में वर्षा जल संरक्षण तंत्र का लोकार्पण किया
- माननीय राज्यपाल कल्याण सिंह ने 11 दिसम्बर, 2015 को राजुवास परिसर में नवीनीकृत पशुपालन विश्राम गृह का लोकार्पण किया

- केन्द्रीय खाद्य एवं उपभोक्ता मामले राज्यमंत्री श्री सी.आर. चौधरी द्वारा 7 अक्टूबर, 2016 को पशु विविधिकरण सजीव मॉडल में प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन
- श्रम एवं रोजगार राज्यमंत्री श्री सुरेन्द्र पाल सिंह टीटी द्वारा 31 जनवरी, 2016 को पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ के नए भवन का लोकार्पण
- माननीय राज्यपाल श्री कल्याण सिंह ने 28 अप्रेल, 2016 को पशुधन अनुसंधान केन्द्र कोडमदेसर (बीकानेर) में स्वदेशी गौवंश प्रजनन फॉर्म की आधारभूत सुविधाओं का लोकार्पण किया

❖ **विमोचन**

- माननीय मुख्यमंत्री द्वारा "चारागाह विकास तकनीक में वेटरनरी विश्वविद्यालय के नए आयाम" पुस्तिका का 25 जनवरी, 2016 का विमोचन
- कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी द्वारा "प्रदेश में पशुपालन के विकास में राजुवास के प्रयास" 24 जून, 2016 को पुस्तिका का विमोचन
- कृषि एवं पशुपालन मंत्री श्री प्रभुलाल सैनी ने राजुवास के "पशुपालन नए आयाम" एग्रीटेक विशेषांक का 9 नवम्बर, 2016 को विमोचन
- गृहमंत्री श्री गुलाबचंद कटारिया ने "पशुओं के लिए पौष्टिक पशु आहार अजोला" पुस्तिका का 10 नवम्बर, 2016 को विमोचन किया।
- वन एवं पर्यावरण राज्य मंत्री श्री राजकुमार रिणवा द्वारा 16 जनवरी, 2016 को उन्नत पशुपोषण एवं हाइड्रोपोनिक्स तकनीक द्वारा हरा चारा उत्पादन प्रशिक्षण संदर्शिका का विमोचन
- वन एवं पर्यावरण मंत्री श्री राजकुमार रिणवां 23 जुलाई, 2016 को पशु आहार एवं चारा बुलेटिन के नवीन अंक का विमोचन किया।
- केन्द्रीय कृषि राज्य मंत्री श्री पुरूषोत्तम रूपाला द्वारा 12 अक्टूबर, 2016 को पशु आहार व चारा बुलेटिन का नई दिल्ली में विमोचन

❖ **राष्ट्रीय/अर्न्तराष्ट्रीय वैज्ञानिक सम्मेलनों से ज्ञान का आदान–प्रदान**

- अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजनोओं की पहली वार्षिक बैठक का आयोजन 17–18 अप्रेल, 2015 को बीकानेर में किया गया। गाय–भैंसों में प्रजनन क्षमता के विकास और उत्सर्जित मीथेन के आकंलन कार्यों की समीक्षा की गई।
- पशुओं में डॉयग्नोस्टिक इमेजिंग पर अखिल भारतीय नेटवर्क परियोजना की समीक्षा बैठक 24 जुलाई, 2015 को बीकानेर में आयोजित की गई।
- सूक्ष्म जीव विज्ञान एवं पशु जैव तकनीकी में अनुवादकीय शोध पर विशेषज्ञों–वैज्ञानिकों की राष्ट्रीय सेमीनार 7–8 अक्टूबर, 2015 को बीकानेर में आयोजित की गई, जिसमें 250 वैज्ञानिकों ने भाग लिया।
- गौपालन विभाग राजस्थान के सहयोग से गौशाला प्रबंध को वेटरनरी और आयुर्वेट अधिकारियों की कार्यशाला 20 फरवरी, 2016
- वेटरनरी मेडिसिन फोरेन्सिक पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित 5–6 मर्च, 2016
- 5 एफ और हाइड्रोपोनिक्स तकनीक पर राष्ट्रीय कार्यशाला आयोजित 26 फरवरी, 2016
- राजस्थान मेला प्रधिकरण, जयपुर के सहयोग से मेलों में आपदा प्रबंधन पर कार्यशाला 12 मई, 2016
- राज्य सरकार की एम. पावर परियोजना में बकरी आधारित आजीविका पर कार्यशाला 12 अप्रैल, 2016
- गौशाला संचालकों का संभागीय सम्मेलन आयोजित 18 सितम्बर, 2016
- वेटरनरी विश्वविद्यालय और इंडियन एसोसिएशन ऑफ वेटरनरी पब्लिक हैल्थ स्पेशलिस्ट के संयुक्त तत्वावधान में 20–21 नवम्बर, 2016 को" वेटरनरी कॉलेज नवानियां (उदयपुर) में "इनोवेटिव अप्रोचेज टू प्रमोट फूड सेफ्टी

एण्ड रिड्यूस दी रिस्क ऑफ जूनोटिक डिसीसेस इन कॉन्टेस्ट ऑफ क्लाइमेट चेन्जेज" विषय पर 14वी वार्षिक संगोष्ठी और राष्ट्रीय सिम्पोजियम का आयोजन किया गया।

- वेटरनरी विश्वविद्यालय और अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् के तत्वावधान में 19 नवम्बर, 2016 को "एग्रीवीजन" विषय पर कृषि एवं पशुचिकित्सा, शिक्षा, विद्यार्थियों और शिक्षकों की एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

❖ **राष्ट्रीय और राज्य स्तरीय मेलों और प्रदर्शनियों में सहभागिता**

वैज्ञानिक रीति–नीति और नवाचारों को आम जन तक पहुँचाने के लिए प्रसार शिक्षा निदेशाालय द्वारा गत तीन वर्षों में राज्य और देश के विभिन्न स्थानों पर 18 प्रदर्शनियों का आयोजन कर पशुपालन और चिकित्सा तकनीकों का प्रसार किया गया :

- 8–12 जनवरी, 2015 मुक्तसर (पंजाब) में प्रोग्रेसिव पंजाब लाइवस्टॉक एक्सपो–2015 में प्रदर्शनी
- राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान, करनाल में 1–2 मार्च, 2015 को 12वें कृषि विज्ञान मेला कांग्रेस में प्रदर्शनी
- कृषि विज्ञान केन्द्र गोद गांव (उदयपुर) में 1–2 मार्च, 2015 को कृषि मेला
- केन्द्रीय अर्द्ध शुष्क अनुसंधान संस्थान जोधपुर में 24 सितम्बर, 2015 46 वां कृषि मेला
- राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रौन्नति प्राधिकरण द्वारा नेहड़ी देशनोक (बीकानेर) में 28 अक्टूबर, 2015 को प्रदर्शनी का आयोजन
- सादड़ी (पाली) में आयोजित 6–8 नवम्बर, 2015 को मारवाड़ केमल कल्चर फेस्टिवल में प्रदर्शनी
- सूचना एवं जन सम्पर्क विभाग, राजस्थान द्वारा जयपुर में 13–16 दिसम्बर, 2015 को राज्य स्तरीय प्रदर्शनी
- 8–12 जनवरी, 2016 को 8वें राष्ट्रीय पशुधन चैम्पियनशिप और एक्सपो–2016 मुक्तसर (पंजाब) में प्रदर्शनी राजस्थान धरोहर संरक्षण एवं प्रौन्नति प्रधिकरण द्वारा गोगामेडी (हनमानगढ) में 19 जनवरी, 2016 में प्रदर्शनी
- 28 मार्च, 2016 को पूसा नई दिल्ली में कृषि उन्नति मेले में प्रदर्शनी का आयोजन
- केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर द्वारा 28 मार्च, 2016 को "राष्ट्रीय भेड़ व किसान मेले में प्रदर्शनी
- स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय बीकानेर द्वारा 30 अप्रेल, 2016 को किसान मेला और कृषि प्रदर्शनी में भाग लिया।
- केन्द्रीय शुष्क अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में 21 सितम्बर, 2016 को प्रदर्शनी का आयोजन
- राज्य सरकार द्वारा जयपुर में 9–11 नवम्बर 2016 को आयोजित ग्लोबल राजस्थान एग्रीमीट–2016 में प्रदर्शनी का आयोजन
- 9वीं राष्ट्रीय पशुधन चैम्पियनशिप और एक्सपो–2016 मुक्तसर, पंजाब में 2–5 दिसम्बर, 2016 को प्रदर्शनी का आयोजन
- राज्य सरकार द्वारा बीकानेर में 13–19 दिसम्बर, 2016 को आयोजित सुराज प्रदर्शनी में राजुवास स्टॉल की प्रदर्शनी
- केन्द्रीय भेड़ एवं ऊन अनुसंधान संस्थान, अविकानगर द्वारा 4 जनवरी, 2017 को "राष्ट्रीय भेड़ व ऊन मेले में प्रदर्शनी
- 104वीं राष्ट्रीय विज्ञान कॉग्रेस में 3–7 जनवरी, 2017 को राजुवास प्रदर्शनी का आयोजन
- 13वीं कृषि विज्ञान कांग्रेस बेंगलौर में 22–24 फरवरी, 2017 को राजुवास प्रदर्शनी का आयोजन
- एग्री युनिफेस्ट–2017 का 22–25 फरवरी 2017 तक बीकानेर में आयोजन
- ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट कोटा में 24–25 मई 2017 में प्रदर्शनी का आयोजन
- जिला स्तरीय कृषि एवं पशुविज्ञान मेले का 6 अक्टूबर, 2017 को बीकानेर में आयोजन किया गया
- ग्लोबल राजस्थान एग्रीटेक मीट उदयपुर में 7–9 नवम्बर, 2017 में प्रदर्शनी का आयोजन

7. सार संक्षेप

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय अधिनियम 2010 की धारा 1 उपखण्ड (3) के अन्तर्गत नवस्थापित विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय के कुलाधिपति स्वयं महामहिम राज्यपाल है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना दिनांक 13 मई, 2010 को की गई।

वेटरनरी विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालय बीकानेर, नवानियाँ (उदयपुर) एवं पी.जी.आई.वी.ई.आर., जयपुर में स्नातक, स्नातकोत्तर एवं विद्या–वाचस्पति पाठ्यक्रम चलाये जा रहे हैं। स्नातक पाठ्यक्रम हेतु 240 सीटें, स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम 18 विषयों हेतु 104 सीटें एवं विद्या–वाचस्पति पाठ्यक्रम 16 विषयों हेतु 42 सीटें उपलब्ध है। विश्वविद्यालय द्वारा पशुपालन में दो वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रदेश के 72 शिक्षण केद्रों पर चलया जा रहा है जिसमें प्रतिवर्ष लगभग 6850 विद्यार्थी प्रशिक्षित हो रहे हैं। विश्वविद्यालय के स्वीकृत कुल 1152 (शैक्षणिक एवं अशैक्षणिक) पदों पर 156 शैक्षणिक स्टॉफ तथा शेष अशैक्षणिक पदों पर कुल 312 अधिकारी/कर्मचारी कार्यरत है। विश्वविद्यालय ने तमाम गतिविधियों को ई–गर्वनेंस के तहत लाकर प्रवेश, भर्ती और उत्तरपुस्तिका की जाँच की प्रक्रिया को ऑनलाइन किया है। ऑनलाइन उत्तर पुस्तिकाओं की जाँच करवाने वाला यह विश्वविद्यालय देश का प्रथम विश्वविद्यालय बन गया है।

विश्वविद्यालय शिक्षा, अनुसंधान और प्रसार के निष्पादन के लिए समस्त सुविधाओं से सम्पन्न है। सरकार की नीति के अनुसार प्रत्येक जिलें में विश्वविद्यालय का एक प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र खोला जाये जिसकी क्रियान्विति में अब तक 13 स्थानों पर वीयूटीआरसी खोले जा चुके है। विश्वविद्यालय द्वारा समय–समय पर पशुपालकों और किसानों के प्रशिक्षण के लिए कृषि मेलों एवं प्रदर्शनियों का आयोजन किया जाता है। वेटरनरी विश्वविद्यालय की विभिन्न इकाइयों और संस्थानों द्वारा गत तीन वर्षों में 583 प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन कर 18663 कृषक और पशुपालकों को प्रशिक्षित किया गया। विश्वविद्यालय द्वारा 29 पशुचिकित्सा शिविरों का आयोजन करके 689 पशुओं को लाभ पहुँचाया गया। 67 विचार–गोष्ठी और वैज्ञानिक संवाद कार्यक्रमों का आयोजन करके 2501 कृषक–पशुपालक लाभान्वित किये गए। विश्वविद्यालय द्वारा रेडियो कार्यक्रम ''धीणे री बात्यां'' प्रदेश के सभी 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रत्येक गुरुवार सायं 5.30 से 6.00 बजे तक प्रसारित किया जा रहा है।

मानसरोवर जयपुर परिसर में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत 150 लाख रूपये की राशि से उन्नत दुग्ध जांच प्रयोगशाला स्थापित की गई है। अभी तक राज्य के 28 जिलों से प्राप्त 4797 नमूनों की जांच की जा चुकी है। जांच परिणामों का परीक्षण जारी है जिसमें प्रमुखतया मिलावट, कीटनाशकों की उपस्थिति तथा रोगकारक बैक्टीरिया की उपस्थिति के क्षेत्रों का पता लग सकेगा। बीकानेर में पशु रोगों पर नियंत्रण हेतु विश्वविद्यालय द्वारा 36.50 लाख राशि से वैक्सिनोलॉजी एवं बायोलॉजिकल प्रोडक्ट्स रिसर्च केन्द्र शुरू किया गया।

वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर में ढाई करोड़ रूपये की लागत से पशु रोगों के निदान के लिए देश में पहली बार राजस्थान में पशु सीटी स्केन मशीन स्थापित की जा रही है। इस मशीन की स्थापना से पशु रोगों का मनुष्यों की तरह सटीक निदान हो सकेगा। जामडोली जयपुर में आयोजना मद से 630 लाख रूपये राशि से वेटरनरी क्लिनिकल कॉम्प्लेक्स का निर्माण शुरू किया गया है।

विश्वविद्यालय ने राज्य के विभिन्न स्थानों पर स्थित 8 पशुधन अनुसंधान केन्द्रों पर राज्य की 6 देशी गौवंश नस्लों राठी, थारपारकर, गिर, साहीवाल, मालवी और कांकरेज के विकास और संवर्द्धन का कार्य शुरू किया है। इसके तहत पशुपालकों व गौशालाओं को स्वदेशी गौवंश प्रजनन के लिए उन्नत किस्म के बछड़े और सांड उपलब्ध करवा रहे हैं। राजुवास द्वारा 1000 से भी अधिक श्रेष्ठतम नस्ल के बछड़े व सांड उपलब्ध करवाए गए हैं। इससे गौशालाओं और पशुपालकों के यहां स्वदेशी गौवंश की संख्या में बढ़ोतरी के साथ हैरिटेज जीन बैंक की अवधारणा को मूर्त रूप मिल रहा है। अपनी स्थापना के सिर्फ कुछ ही वर्षों में राजुवास देश के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों की सूची में शुमार हो चुका है। विश्वविद्यालय का यह प्रयास रहेगा कि राजस्थान में पशुपालन और अधिक तकनीकी रूप से समृद्ध हो तथा यहां के पशुपालक को तकनीकी जानकारी किसी भी दूसरे राज्य के मुकाबले अधिक हो ताकि आने वाले समय में जलवायु परिवर्तन की स्थिति में पशुपालन कृषि व्यवसाय को संबल प्रदान कर सकें। यह विश्वविद्यालय समाज, पशुपालकों और राज्य के हितों के लिए नित नये कार्यक्रमों व योजनाओं के साथ लोगों की अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए प्रयत्नशील है। हमारा प्रयास होगा कि यह विश्वविद्यालय दुनिया के सिरमौर विश्वविद्यालयों में शामिल हो।

। पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम् ।

प्रकाशक

प्राथमिकता, नियंत्रण एवं मूल्यांकन प्रकोष्ठ (पी. एम. ई. सेल)

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय

बीकानेर-334 001 (राजस्थान)

टेलीफोन: 0151-2543419 ईमेल: dpmerajuvas@gmail.com

मुद्रक : डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, बीकानेर # 9784105819